नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका * वर्ष-11 * अंक-1 * मुम्बई * जनवरी-2020 * मूल्य-रु.9/-

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 16 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न
विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित करते हुए कुछ छायाचित्र

अध्यात्म और विज्ञान

डॉ. जितेन्द्र पाण्डेय

यदि मानव ने एक तरफ शशिमुख को पैरों तले रौंदा है, संजय की दिव्यदृष्टि प्राप्त की है, रावण की शक्ति अर्जित की है और सुन्दर पुष्पक विमानों की रचना की है तो दूसरी तरफ कई मासूम द्रौपदियों का चीर हरण हुआ, करोड़ों लोग महाभारत रूपी विश्वयुद्ध की अग्नि में भस्म हुए और अनेक दिग्भ्रमित नवयुवकों ने अश्वत्थामा की तरह जेहाद के नाम पर खून से अपने हाथ रंगे। इन सबके मूल में क्या है जो मानव मस्तिष्क को विध्वंसक आविष्कारों की तरफ मोड़ दिया है, निर्विवाद रूप से अध्यात्म का अभाव।

आज हम विज्ञान और अध्यात्म को एक दूसरे का विरोधी मानते हैं किन्तु ऐसा मानना सर्वथा भ्रामक है। अध्यात्म के ही गर्भ से विज्ञान की उत्पत्ति हुई है। 'अध्यात्म' 'अधि' और 'आत्म' के योग से बना है। 'अधि' का अर्थ 'जानना' और 'आत्म' का अर्थ 'स्वयं' है, अर्थात् स्वयं (आत्मा) को जानना। जिस जानकारी (ज्ञान) का सम्बन्ध 'आत्मा' से है उसे ही अध्यात्म कहा जाता है, लेकिन यह भी परिभाषा तब तक अपूर्ण रहेगी जब तक इसे व्यावहारिक धरातल पर उतारकर न देखा जाय। यही ज्ञान जब व्यावहारिक धरातल पर प्रयोग के रूप में प्रतिफलित होता है तो वह विज्ञान कहलाता है। प्राचीन काल में विज्ञान का उद्देश्य 'परहित सरिस धरम नहीं भाई' था किन्तु ज्यो-ज्यों हमारी आसक्ति बाह्य वस्तुओं (भौतिकता) की तरफ बढ़ती गयी त्यों-त्यों हमें सुरक्षा की आवश्यकता महसूस पड़ी। हमारे अन्दर भय, निराशा और कुंठा ने जन्म लिया तथा महत्त्वाकांक्षा की ललक जागी। परिणामस्वरूप विज्ञान के द्वारा मानव विनाश का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय राष्ट्र एक भयावह संक्रमण से गुजर रहा है। यदि एक तरफ पेप्सी और कोला जैसी विदेशी कम्पनियाँ विकास के नाम पर कार्बन डायआक्साइड रूपी जहर लोगों को देकर करोड़ों की लूट कर रही हैं तो दूसरी तरफ विदेशी चैनल भारतीय संस्कृति पर चौतरफा आक्रमण कर हमें मानसिक रूप से अपंग बना रहे हैं। एक से शरीर का नाश हो रहा है तो दूसरे से हमारी बुद्धि का। उल्लेखनीय है इसमें राजनेताओं की अहम् भूमिका है जो अपनी जेब भरने के लिए देश भी बेचने को तैयार हैं। इसका ज्वलन्त उदाहरण का मुखौटा पहनकर विदेशी निवेशकों को साष्टांग प्रणाम करना और भारत में पूँजी निवेश की खुली छूट देना है। ऐसी गड्डमड गड्डमड स्थिति में अध्यात्म ही हमें एक नया आलोक प्रदान कर सकता है।

वर्तमान समय में हम पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता के अंधानुकरण में इतने विवेकशून्य हो गये हैं कि हम अध्यात्म को गतिशून्य और विकास के मार्ग में बाधक मानते हैं। यदि हम अतीत को देखें तो वैदिक युग में आर्यावर्त केवल विश्व का आध्यात्मिक गुरू ही नहीं था बल्कि इसे सोने की चिडिया भी कहा जाता था। उस समय अध्यात्म का समृद्धि से कोई वैषम्यता न थी। आज विदेशी कर्ज के बोझ से झुके हुए हम अध्यात्म पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर रहे हैं। यदि विज्ञान में भौतिकता का आधिक्य होगा तो पेंटागन जैसी अनेक संस्थाओं का निर्मार होगा और यदि विज्ञान के मूल में अध्यात्म को तरजीह दी जाएगी तो बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय होगा।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है अवश्य, किन्तु यदि यह आवश्यकता बाह्य जगत की होगी तो भौतिकता का आकर्षण बढ़ेगा जबकि अन्तर्मुखता पर अध्यात्म का। भौतिक लिप्सा मानव को पतन की तरफ अग्रसित करती है जबकि अध्यात्म एक विवेकमय संतुलन स्थापित करता है, जिससे रामराज्य की कल्पना सार्थक होती है। आध्यात्मिक के अभाव में हम विज्ञान की तलवार से अबोध बालक की तरह खेल रहे हैं, जिसे सचेत करते हुए कवि दिनकर ने लिखा है-

सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध है तू शिशु अभी अज्ञान,
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

अब यह आवश्यकता महसूस की जा रही है कि पुन: विज्ञान को अध्यात्म से जोड़ा जाय। यह कार्य कोई धर्मोपदेशक या प्रशासक नहीं कर सकता है, यह मात्र शिक्षाजगत से सम्भव है क्योंकि जब हिन्दू धर्म पतन के कगार पर था, तो गुरु रामदास ने शिवाजी का सृजन किया, भारतीय दर्शन, धर्म तथा संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द का सृजन किया, धर्म और सत्य की पुनर्स्थापना के लिए योगिराज कृष्ण ने अर्जुन का सृजन किया, भारत जब छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था, तब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का सृजन कर भारत को एक संगठित शक्ति के रूप में उभारा, भारतीय जनमानस जब पाखंड में आकण्ठ डूबा या तो पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा फहराने के लिए गुरू विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का सृजन किया। ठीक उसी प्रकार अध्यात्म में ही वह शक्ति है जिसे शिक्षा से जोड़कर विज्ञान को शिवता की तरफ उन्मुख करके सम्पूर्ण परिदृश्य को सकारात्मकता की तरफ मोड़ा जा सकता है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना साकार की जा सकती है।

❖❖❖

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ११ अंक–०१ (जनवरी – २०२०)

- दयानंदाब्द : १९५, विक्रम सम्वत् : २०७६
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११९

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री, लालचन्द आर्य, रमेश सिंह आर्य, यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क
— पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/– — एक प्रति : रु. ९/–
— १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/– — वार्षिक : रु. १००/–
— १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/– — आजीवन : रु. १०००/–
— विशेषांक की दरें भिन्न होंगी ।
वर्गीकृत विज्ञापन

रु. १०/– प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/–

चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। **'नूतन निष्काम पत्रिका'** का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई –५४. फोन : २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
अध्यात्म और विज्ञान	२
सम्पादकीय	३
सृष्टि उत्पत्ति में एकत्वाद, द्वैतवाद या त्रैतवाद	४
गायत्री की प्रमुख विशेषता	६
यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की पवित्रता	७
ईश्वर भक्ति गायत्री मंत्र के माध्यम से	८
क्षमा के अवतार दयानन्द	९
महर्षिर्विरजानन्द:	१०
वेदाङ्ग ज्योतिष	११-१२
संकट के साये में भविष्य	१३
देश धर्म का दिवाना-पं. घासी राम गौड	१४
महर्षि दयानन्द के कुछ प्रेरक व शिक्षाप्रद प्रसंग	१५
आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का १६ वां वार्षिको..	१६

सम्पादकीय ※ मनुस्मृति पर मिथ्या आक्षेप ※

भारतीय संस्कृति में वेदों के बाद यदि कोई सबसे बड़ा महत्त्वपूर्ण, वास्तविक, विश्वसनीय, महान धर्मशास्त्र ग्रंथ है। तो वह मनुमहाराज द्वारा लिरिक्त 'मतुस्मृति' है यह वैदिक संस्कृति का या यूं कहें हिंदू समाज का सबसे बड़ा ग्रंथ माना गया है। इसके पीछे अनेक कारण है। जिनमें प्रमुख कारण है वेदों की समस्त बातों का इस ग्रंथ में सार रूप में आलेखन। इसीलिए मनुस्मृति को स्मृतियों व धर्म शास्त्रों में सर्वाधिक प्रमाणित आर्ष ग्रंथ माना गया है। मनुस्मृति में जगह-जगह वेदों की भूरी भूरी प्रशंसा की गई है। मनु जी ने तो यह भी लिखा है- 'वेदोऽखिलो धर्ममूलं।' ब्राह्मण ग्रंथ में लिखा है - मनु ने जो कुछ भी मनुस्मृति में लिखा है वह मानव के लिए भेषज अर्थात औषधी के समान है। मनुस्मृति के उपदेश सार्वकालिक व सार्वभौमिक है। इसकी व्यवस्थाएं समस्त मानव समाज के लिए अनुकरणीय हैं। यह ग्रंथ भारत ही नहीं बल्कि जावा, बाली, फिलीपीन आदि अन्य देशों में भी अत्यंत प्रसिद्ध व प्रचलित है। इतना होते हुए भी आज के युग में मनुस्मृति पर अनेक प्रकार के आक्षेप लगाए गए हैं-

१) सबसे प्रथम आरोप तो यह है कि इससे जातिवाद को बढ़ावा मिला है। किंतु सच तो यह है कि मनुस्मृति में कहीं भी जाति प्रथा का वर्णन नहीं है। हां वर्ण व्यवस्था का उल्लेख अवश्य है और वह वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं किंतु कर्म के आधार पर ही कही गई है।

मनुस्मृति में कहा गया है जो व्यक्ति नित्य प्रातः एवं सायं ईश्वर भक्ति नहीं करता है वह शूद्र के समान है फिर वह ब्राह्मण ही क्यों ना हो। जो व्यक्ति वेदों की शिक्षा में दीक्षित नहीं होता है, उसे शूद्र की संज्ञा दी गई है। ब्राह्मण अपने निम्न आचरण से शूद्र की श्रेणी में आ सकता है। जैसे लकड़ी से बना हाथी सिर्फ नाम से ही हाथी कहा जाता है वैसे ही बिना पढ़ा लिखा ब्राह्मण मात्र नाम का ही ब्राह्मण होता है। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुस्मृति में जातिवाद, ऊंच-नीच, भेदभाव का कहीं भी संकेत नहीं है इसके विपरीत उन्होंने समाज को समानता का उपदेश ही दिया है।

२) मनुस्मृति में शूद्रों की अवहेलना व अनादर किया गया है। किंतु यह आरोप भी निराधार है क्योंकि मनुस्मृति के श्लोकों के माध्यम से दंपति को आदेश दिया गया है कि वह पहले अपने सेवक को अर्थात शूद्र वर्ग को भोजन कराकर फिर भोजन करे। मनु ने शूद्रों के लिए उत्तम, उत्कृष्ट एवं शुचि जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। शूद्रों को धर्म पालन की छूट भी दी गई है, उन्हें धार्मिक कार्य करने में छूट दी है। दंड व्यवस्था के तहत भी मनु ने शूद्रों को सबसे कम दंड देने की सिफारिश की है।

३) तीसरा आक्षेप यह है कि इसमें नारी का अनादर किया गया है। किंतु पूरी मनुस्मृति पढने पर हमें कहीं भी नारी शक्ति का अपमान दृष्टिगोचर नहीं होता है। उनका यह विश्व प्रसिद्ध श्लोक - यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता.. नारी शक्ति का महिमामंडन ही कर रहा है। मनुस्मृति में तो स्त्रियों को लक्ष्मी की उपमा दी गई है। यही नहीं पुत्र के समान पुत्री को भी पिता की संपत्ति के समान अधिकार देने की बात की गई है। मनु ने कहा है नारियां घर की शोभा, सौभाग्य,आदरणीय, संचालिका व मालकिन होती है, उनके शोकाकुल होने से घर का नाश हो जाता है। मनुस्मृति में विधवाओं को पुनर्विवाह करने का भी अवसर दिया गया है और दहेज का पुरजोर विरोध जताया है। अतः मनु नारी विरोधी नहीं अपितु उनके प्रबल पक्षधर थे।

इन्हीं गलत आक्षेपों के कारण वर्तमान भारत के संविधान निर्माता डॉ. आंबेडकर आदि बुद्धिजीवियों ने भी इस महान ग्रंथ की निंदा की है। किंतु यहाँ यह स्पष्ट करना अत्यावश्यक है कि उनके द्वारा मनुस्मृति का विरोध का आधार मूल मनुस्मृति नहीं है बल्कि कालांतर में विदेशी विद्वानों द्वारा मनुस्मृति में अनेक प्रकार की विक्षिप्तियां व विसंगतियां का भरना है।

वर्तमान मनुस्मृति में २६८५ श्लोकों में से १४७१ श्लोक मिलावटी और १२१४ श्लोक ही मौलिक हैं। यही मिलावटी श्लोक मनुस्मृति के विषय में भ्रांतियों का कारण है। इसलिए यदि हम सही मनुस्मृति को देखना चाहते हैं और उससे लाभ पाना चाहते हैं तब इन मिलावटी श्लोकों को हटाकर मौलिक व सही श्लोकों को ही देखना होगा।

जब मनुस्मृति का आधार वेद है, मनुस्मृति की समस्त बातें वेदों से ही ली गई हैं और जब स्वामी दयानंद जी ने इसे आर्ष ग्रंथ माना है, तब यह मानना कि मनुस्मृति के विचार गलत व समाज विरोधी होंगे यह अनुचित होगा। अतः हमें उस विरोध की जड़ पर चिंतन करना होगा, प्रहार करने होगा तभी हम इस अद्भुद ग्रंथ का अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं।

सन्दीप आर्य
मो.: ९९६९ ०३७ ८३७

सृष्टि उत्पत्ति में एकत्वाद, द्वैतवाद या त्रेतवाद

पं. उम्मेदसिंह विशारद वैदिक प्रचारक
मे. : 94115 12019

आत्मा और ईश्वर के दो तत्वों के अतिरिक्त 'भौतिक द्रव्य' एक तीसरा तत्व है, इसलिए वैज्ञानिक दृष्टि से यह विचार करना आवश्यक है कि सृष्टि उत्पत्ति कें मूल तत्व कितने है। मूलभूत तत्वों के विषय में वैज्ञानिक दृष्टि से मुख्य तौर पर निम्न विचार धाराओं पर विचार किया जाता है।

एकत्ववाद

एकत्वाद का सिद्धान्त कहता है कि या तो जड़ से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है या चेतन से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। अगर जड़ से सृष्टि का निर्माण माने तो मानना पड़ता है कि भौतिक द्रव्य (प्रकृति) से ही जीवन की उत्पक्ति हुई है। ये लोग जड़ से जीवन की उत्पक्ति मानते है, किन्तु आत्मा-परमात्मा जैसे तत्व नहीं मानते। यह धारणा प्राचीन युग के चार्वाकों ने की है, वर्तमान युग के जड़वादियों भौतिक वादियों की है। अगर चेतन से सृष्टि का निर्माण माने तो मानना पड़ता है कि चेतन तत्व से ही भौतिक द्रव्य (प्रकृति) की उत्पत्ति हुई है। ये लोग भौतिक द्रव्य तथा जीवात्मा की पृथक, स्वतन्त्र, अनादि सत्ता नहीं मानते। यह धारणा भारतीय दार्शनिक में मुख्य तौर पर शंकराचार्य (788-820) के वेदान्त सिद्धान्त के पाश्चात्य दार्शनिकों में मुख्य तौर स्पाइनोज (1632-1677) तथा बर्कले (1685-1753) की और मत वादियों में यहूदी, ईसाई व मुसलमानों की है। यहूदी, इसाई तथा मुसलमान मानते है कि ईश्वर एक है, उसी ने अभाव से नेस्ति से जगत तथा जीव को उत्पन्न कर दिया। भारत में इस मत के प्रवर्तक आचार्य बृहस्पति माने जाते हैं। चार्वाक का अर्थ है, ''चारु बाक'' मीठी वाणी बोलने वाला। उनका कहना है कि न कोई ईश्वर है न जीव है, यह देह ही सब कुछ है। देह नष्ट हुआ सब कुछ समाप्त हो गया। मानव देह पृथ्वी, अप, तेज, वायु तत्वों से देह तथा संसार बना है।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब ये चार तत्वों से जड परमाणुओं के मिश्रण से बने है, तब इन जड तत्वों के मिश्रण से चेतन तत्व जीव कैसे उत्पन्न हुआ

चार्वाक का उत्तर : जिस प्रकार दही और गोबर मिला देने से कीडे उत्पन्न हो जाते है, इसी प्रकार भिन्न-भिन्न परमाणुओं के एक विशेष प्रकार विशेष मात्रा से मिलने से आत्मा उत्पन्न हो जाता है। वर्तमान विज्ञान का उदाहरण लिया जाए तो जैसे हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन दोनो अदृश्य तत्व है इन दोनों के एक विशेष मात्रा में सम्मिश्रण से जल नामक तत्व उत्पन्न हो जाता है जो इन दोनों से भिन्न है, वैसे ही भिन्न भिन्न जड परमाणुओं के मिश्रण से उनसे भिन्न भिन्न तत्व उत्पन्न हो जाते है। उत्तर है कि दही और गोबर को तथा हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन को तो मिलाने वाली दूसरी चेतन हस्ती होती है। कलेवर बढ़ने के कारण एकत्ववाद को यहीं विराम देते है।

द्वैतवाद

द्वैतवाद का सिद्धान्त यह है कि मूलभूत सताऐं दो हैं- जीव तथा प्रकृति। यह धारणा सांख्य दर्शन की कही जाती है। सांख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिल थे। सांख्य दर्शन को निरीखर सांख्य कहा जाता है। ऋषि दयानन्द जी ने सांख्य को सेशवरवादी ही माना है। सांख्य का मुख्य विषय प्रकृति तथा पुरुष जड़ तथा चेतन इन दो तत्वों पर विचार करना है।

भारतीय दर्शन शास्त्र में एकत्ववाद के विरुद्ध सबसे पहले प्रबल आवाज सांख्यकार महर्षि कपिल ने उठाई। उनका कहना है कि सृष्टि में अन्तिम सता में एक तत्व मानने से काम नहीं चल सकता। जड़ तथा चेतन दो सत्ताओं को तो मानना ही पड़ेगा तभी सृष्टि उत्पत्ति की समसया का समाधान हो सकता है। इस विचार को सांख्य दर्शन का प्रकृति पुरुष का सिद्धान्त कहा जाता है। वैदिक संस्कृति के भोक्ता-भोग्य, दृष्टा, दृश्य आदि सिद्धान्तों का प्रारम्भ इसी द्वैतवाद के सिद्धान्त से हुआ है। द्वैतवाद के आचार्यों का मत है एक सत्ता जड़ है दूसरी चेतन। उनका कहना है कि सृष्टि की समस्या को समझने के लिए इन दो को तो मानना ही पड़ेगा। चेतन भी एक की जगह दो है; एक आत्मा दूसरा परमात्मा।

सांख्यमतानुसार जब सरकार्यवाद सिद्ध हो जाता है तब यह मत अपने आप ही गिर जाता है, कि दृश्य सृष्टि की उत्पत्ति शून्य से हुई है अर्थात जो कुछ है ही नहीं उससे जो अस्तित्व है वह उत्पन्न नहीं हो सकता। इस बात से साफ सिद्ध होता है कि सृष्टि किसी न किसी पदार्थ से उत्पन्न हुई है और इस समय सृष्टि में जो गुण हमें दीख पड़ते है, इन सबके रुप तथा गुण भिन्न भिन्न है। सांख्यवादियों का सिद्धान्त है कि यह भिन्नता तथा नानात्व आदि में अर्थात मूल पदार्थ में तो नहीं दीखता किन्तु मूल में सबका द्रव्य एक ही है। अर्वचीन रसायन शाख्यओं ने भी भिन्न द्रव्यों का पृथककरण करके पहले 62 मूल तत्व फिर 92 और अब 105 ढूंढ निकाले थे। अब पश्चिमी विज्ञान बेत्ताओं ने भी यह निश्चय कर लिया है कि ये मूल तत्व स्वतन्य वा स्वयं सिद्ध नहीं है। इन सबकी जड़ में कोई न कोई एक ही पदार्थ है, उस पदार्थ में प्रकृति कहते हैं। सांख्यवादियों ने सब पदार्थों का निरीक्षण करके पदार्थों में तीन गुणों को पाया है सत्व, रज तथा तम इसलिए मूल द्रव्य में प्रकृति में भी इन तीन गुणों को मानते हैं। जिसके कारण प्रकृति में नानात्व पाया जाता है, एक प्रकृति से इन तीन गुणों के कारण अनेक पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं। सांख्य का कथन है कि सांसारिक जड़ पदार्थों की मूल सता प्रकृति है। इसी चेतन को पुरुष, क्षेत्रज्ञ तथा अक्षर कहा गया है।

समीक्षा :- हमने देखा भारतीय चिन्तकों में जहां एकत्वादी थे, वहां द्वित्ववादी भी थे जिनका कहना है कि सृष्टि उत्पक्ति की समस्या सिर्फ एक मूल सत्ता को मानने से हल नही होती। चाहे जड़ को मूल सता माने चाहे चेतन को जड़ से चेतन उत्पन्न नहीं हो सकता, न चेतन से जड उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि यह दोनों तत्व एक दूसरे से भिन्न है। इसलिए इन सब नाना रूपी जड़ रूपों को एक में समाविष्ट कर जड़ प्रकृति का नाम दे दिया

गया। वेसे ही चेतन में अल्पत चेतन और सर्वज्ञ चेतन ये मूल तत्व भी हो यह तीनों शब्द पिण्ड में आत्मा तथा ब्रह्ममाण्डं में परमात्मा पर एक समान घटित हो जाते हैं। विचार किया जाता है सांख्य, उपनिषद आदि में ईश्वर, जीव, प्रकृति इन तीनों मूल सत्ताओं को स्वीकार करते हैं।

त्रेतवाद

त्रेतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

त्रेतवाद का सिद्धान्त है कि किसी वस्तु के निर्माण में तीन प्रकार के कारणों का होना आवश्यक है। वे है उपादान कारण, निमित कारण तथा असमयावी (अकारिक कारण)। उदाहरणार्थ हम घड़े का दृष्टान्त लेते हैं। उपादान या समवायी कारण वह है जिसके बिना गड़ा न बन सके, जो स्वयं रूप बदलकर घड़ा बन जाए। इस परिभाषा से मिट्टी घड़े का उपादान कारण या समवायी कारण हुआ। निमित कारण वह है, जिसके बनाने से कुछ न बने, न बनाने से न बने, आप बने नहीं दूसरे को प्रकारान्तर से बना दे। इस परिभाषा में कुम्हार घड़े का निमित कारण हुआ। साधारण कारण वह है जो किसी वस्तु के बनाने में साधन हो या साधारण निमित हो। इस परिभाषा में कुम्हार का गोल चाक आदि घड़े के निर्माण में साधारण कारण हुआ।

त्रेतवाद का या बहुत्ववाद वह सिद्धान्त है जो कहता है मूल भूत सत्ताऐं तीन है। ये मूलभूत सत्ताऐं हैं ईश्वर जीव तथा प्रकृति। वेदों में इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन है। रामानुजाचार्य (जन्म 1017) मध्वाचार्य (जन्म 1119) भी ईश्वर तथा जीव की अलग अलग सताऐं मानते थे। वर्तमान युग में त्रेतवाद का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द (1824-1883) ने किया और अनेको पण्डितों ने सांख्य दर्शन के सूत्रों का भाष्य त्रेतवाद ही किया है। तीन मूल भूत सत्ताओं ईश्वर जीव प्रकृति के सिद्धान्त को हमने त्रेतवाद या बहुत्ववाद की श्रेणी में रखा है।

सृष्टि का उपादन कारण प्रकृति है, परमाणु है। यह उपादान कारण न होता सृष्टि बन नहीं सकती। सृष्टि का निमितकारण ब्रह्म या ईश्वर है। वैसे सृष्टि में प्रकृति ने नाना प्रकार ब्रह्मण्ड में सूर्य-चन्द्र-प्रथ्वी-अप-तेज - वायु-आकाशं आदि तथा पिंड में ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रिया आदि साधारण कारण है। जैसे कुम्हार द्वारा निर्मित घड़े का उद्देश्य पानी भरना है, वैसे सृष्टि का उद्देश्य जीवात्मा को कर्म फल देना होता है। उसे विकास के मार्ग पर डाल देता है। प्रकृति परमेश्वर के साथ जीवात्मा न हो तो सृष्टि का संचालन खेल मात्र रह जाता है।

इन सब कारणों से सृष्टि की रचना में न एकत्ववाद से काम चलता है न द्वित्ववाद से काम चलता है। त्रित्वाद से ही इस समस्या का समाधान हो सकता है। उपनिषिदों गीता सांख्य में त्रेतवाद माना है।

वेदो में त्रेतवाद: द्वा सुपर्णा सयुजा समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्य: पिप्लं स्वादु अति अनश्नन अन्य अभि चाकशीति।। (ऋ.)
बालात एकम अणीयस्कम उत एकं नैव दृश्यते।
तत: परिण्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ।। (अर्थववेद)

पिण्ड रूपी वृक्ष तथा ब्रह्माण्ड रूपी वृक्ष में वह जीव रूपी पक्षी पिण्ड में इन्द्रियों का तथा ब्रह्माण्ड में सांसारिक विषयों मीठा मीठा लुभावना भोग ले रहा है, दूसरा परमेश्वर रूपी पक्षी जीवात्मा द्वारा किये गये रूपी कर्मों का फल देने के लिए उसकी गतिविधि को देखता रहता है।

नोट:- इस लेख का सारांशं वेदों में वैज्ञानिक रहस्यं लेखक डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार से लिया गया है।

गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून उत्तराखण्ड
मो. : 9411512019

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक	:	वैदिक सन्देश
लेखक	:	डॉ सोमदेव शास्त्री
प्रकाशक	:	शिवराजवती ओमकारनाथ धर्मार्थ न्यास
मूल्य	:	५० रुपये मात्र
प्राप्ति स्थान:		१, डॉ सोमदेव शास्त्री ३०९ मिल्टन एपार्टमेंट जुहू कोलीवाड़ा, मुंबई ४९ मो० ९८६९६६८१३०
	२)	आर्य समाज सांताक्रुज लिंकिंग रोड, सांताक्रुज पश्चिम मुंबई ४०००५५ ०२२ २६६०२८००

'वैदिक मिशन मुंबई' के अध्यक्ष डॉ सोमदेव शास्त्री जी अब तक ३५ पुस्तकों का लेखन कार्य कर चुके हैं। इसी श्रृंखला में अब उन्होंने 'वैदिक संदेश' नामक पुस्तक की रचना की है। इस पुस्तक में उन्होंने वैदिक धर्म एवं ईश्वर का सच्चा व सही स्वरूप बताने का प्रयास किया है। इसके साथ साथ पंच महायज्ञ, हमारी प्राचीन आश्रम व्यवस्था, वैदिक वर्ण व्यवस्था, ऋषि दयानंद जी द्वारा प्रणीत त्रैतवाद, कर्म फल व्यवस्था, पुनर्जन्म आदि गूढ़ व कठिन विषयों को भी बड़े सरल ढंग से बतलाया है। मनुष्य के जीवन में संस्कारों की आवश्यकता क्यो है, इन १६ संस्कारों का हमारे जीवन मे क्या महत्व है, इस पर भी इस पुस्तक में प्रकाश डाला है। यदि हम कहें कि इस छोटी सी पुस्तिका में उन्होंने गागर में सागर भर दिया है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आशा है इस पुस्तक को पढ़कर पाठकगण अत्यंत लाभान्वित होंगे और वैदिक धर्म के विभिन्न पहलुओं से परिचित भी होंगे।

सन्दीप आर्य
मंत्री वैदिक मिशन मुंबई

गायत्री की प्रमुख विशेषता

डॉ. वेदप्रकाश आर्य

गायत्री महामंत्र की प्रमुख विशेषता है; त्रयी विद्या अर्थात् सर्वांगपूर्ण भक्ति। महात्मा आनन्द स्वामी लिखते हैं- 'यह देखने में तो वामन विष्णु की तरह छोटा सा तीन पादों (मूल गायत्री) और चौबीस अक्षरों वाला मंत्र है, परन्तु इसके तीन पादों में चारों वेदों की त्रयी विद्या-ज्ञान, कर्म, उपासना निहित है। चारों वेदों में मानव जीवन के कल्याण के लिए जो रहस्य बतलाए गये हैं वे प्रतीक रूप से गायत्री में विद्यमान हैं (महामंत्र)। बुद्धि की प्रार्थना होने के कारण ज्ञान की श्रेष्ठता तो प्रतिपादित ही की गई है, 'धीमहि' के माध्यम से उपासना अर्थात् ईश्वर की समीपता प्राप्त करने का विधान भी है। 'धियो यो न: प्रचोदयात्' के रूप में कर्म की भूमिका भी मूलाधार के रूप में स्थित है। ज्ञान और उपासना के अनुरूप आचरण (कर्म) भी होना चाहिए। इसी का विस्तार मन-वचन-कर्म की एकता के सिद्धान्त के रूप में भारतीय संस्कृति के मनीषियों ने किया। मंत्र का तभी लाभ होता है, जब उसके अर्थ को हृदयंगम किया जाए और इसी के अनुरूप व्यवहार भी किया जाए। योगदर्शन में महर्षि पतंजलि कहते हैं- 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्' महर्षि दयानन्द इसी का अनुमोदन करते हुए कहते हैं कि 'इसमें फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण है, वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी हों और जो केवल भांड़ के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है।'

भक्ति (उपासना) के तीन अंग होते है- स्तुति, प्रार्थना और उपासना। स्तुति अर्थात् ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव का आख्यान करना। इसी विद्या का आगे चलकर 'स्तोत्र-साहित्य' के रूप में विस्तार हुआ है। प्रार्थना का मतलब है- भगवान से अपने लिए कुछ याचना करना-मांगना। उपासना का अर्थ भगवान का सान्निध्य प्राप्त करना। उपासना का अर्थ ही है- 'उप' अर्थात् समीपता। आसन अर्थात् स्थित होना। उपासना की दृष्टि से ही योग के आठ अंगों का विधान महर्षि पतंजलि ने किया है। गायत्री महामंत्र में भक्ति के इन तीनों अंगों का समावेश हुआ है। 'तत्सवितुर्वरेण्यं' स्तुति है। 'भर्गोदेवस्य धीमहि' उपासना है। 'धियो यो न: प्रचोदयात' प्रार्थना है। भक्ति के इस सर्वांग पूर्ण स्वरूप का विवेचन करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है- 'स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण-कर्म-स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना। जहां तक प्रार्थना का सम्बन्ध है, अकर्मण्य की प्रार्थना कभी सफल नहीं होती। जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसका वैसा ही वर्तमान करना चाहिए अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करें उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके, उतना किया करें अर्थात् अपने पुरूषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है।'
(सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास)

गायत्री मंत्र एक महाविचार है। किसी महाविचार को देवी की मूर्ति का रूप देना उसके साथ अन्याय ही होगा। क्या श्रीमद्भगवद्गीता जैसे ग्रंथ को किसी देवी की मूर्ति में रूपान्तरित करना उचित होगा? क्या यह ज्ञान की अजस्र प्रवहमान धारा को रोकने की विफल चेष्टा नहीं होगी? ज्ञान के इस महामंत्र के साथ इस तरह की छेड़छाड़ तो अज्ञान को बढ़ावा देगी, इससे मनुष्य की बौद्धिक चेतना को कुंठित करने में ही मदद मिलेगी।

आशा है विवेकशील लोग इस पहलू को अनदेखा न करते हुए गायत्री की शक्ति और उसकी मूलभूत विशेषताओं का अज्ञान और अंधविश्वासों के निराकरण में उपयोग करेंगें। क्योंकि यह मंत्र एक आकाशदीप की तरह हमें यह निरन्तर संदेश देता है कि अपनी बौद्धिक चेतना का उपयोग करते हुए हम हर प्रकार के अज्ञान, अन्याय, अभाव से लड़ते हुए मानवजीवन और धराधाम को स्वर्ग में परिणत कर सकते है।

जन्म मरण का चक्र ये

वर्ज-धन्य है तुझको......

जन्म मरण का चक्र ये, सदियों से चलता आ रहा।
कोई यहां से जा रहा, कोई वहां से आ रहा ।।टेक।।

सृष्टि की आदि काल से, आवगमन ये चल रहा।
चले जहां से दु:ख है, आए खुशी मना रहा ।।१।।

रोता आया जहान में, हँसते ही जाना धर्म है।
जाना है तुझको एक दिन, उसके लिए क्या कर रहा ।।२।।

चाहे राजा या रंक हो, योगी यति या संत हो।
जिसने भी जन्म है लिया, उन सबको काल खा रहा ।।३।।

मृत्यु को देख देख कर, ज्ञानी लेते है प्रेरणा।
रोते कलपते शेष जन, ऐसा ही चलता आ रहा ।।४।।

सुख की है जो कामना, 'धर्म' को 'धर' ले भाग ना।
ओ३म् का जाप कर सदा, मोक्ष को पथ ये जारहा ।।५।।

– आचार्य धर्मधर

यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की पवित्रता

आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

यज्ञ परिचय :-

यज्ञ शब्द भ्वादिगण की ''**यजदेवपूजासंगतिकरणदानेष**'' धातु से ''**यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो न्यङ्**'' सूत्र से न्यङ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। यज्ञ शब्द अपने अन्दर एक विशाल अर्थ निहित किये हुए है। इसी को दृष्टि में रखते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा- ''**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**''। आचार्य यास्क ने तो यज्ञ के विषय में चर्चा करते हुए निरुक्त शास्त्र में कहा- ''**यज्ञ: कस्मात? प्रख्यातं यजति कर्मेति**''। अर्थात् यज्ञ वह है जिसमें यज् धातु के कर्म पाये जायें। यज् धातु के कर्मो की सुन्दर चर्चा करते हुए महान् मनीषी ऋषि दयानन्द सरस्वती अपने यंजुर्वेद के भाष्य में कहते हैं- ''**धात्वर्थाद्यज्ञस्त्रिधा भवति-** (1) विद्याज्ञानधर्मानुष्ठानवृद्धानां देवानां विदुषामैहिकपारमार्थिकसुखसम्पादनाय सत्करणम्, (2) सम्यक् पदार्थगुणविरोधज्ञानसंगत्य शिल्पविद्याप्रत्यक्षी करणम्, नित्यं विद्वत्समागमानुष्ठानम्, (3) विद्या-सुखधर्मादिशुभगुणानां दानकरणमिति।''

यज् धातु के तीन अर्थ किए गए हैं -

1 देवपूजा- यजनं इन्द्रदिदेवानां पूजनं सत्कारभावनं यज्ञ:। 2 संगतिकरण- इज्यन्ते स्वकीयं बन्धुबान्धवादय: प्रेमसम्मानभाज: संगतिकरणाय आहूयन्ते प्रार्थ्यन्ते च येन कर्मणि यज्ञ:। 3 दान- दान इज्यते देवतोऽद्देश्येन श्रद्धापुरस्सरं द्रव्यादित्यज्यतेऽस्मिन् इति यज्ञ:। स्व निस्वत्ववृत्तिपूर्वक परस्वत्वापादानम्।

यज्ञ शब्द का चारों वेदों में कुल 1184 बार पाठ हुआ है, जिसमें ऋग्वेद में 580, यजुर्वेद में 243, सामवेद में 63 और अर्थवेद में 298 बार हुआ है। काव्य जगत् में दृश्य, श्रव्य, दृश्यश्रव्य रुप से तीन प्रकार के काव्य माने गए हैं। इनमें जो दृष्यश्रव्य काव्य अर्थात् जो नाटक है वही इन काव्यों में श्रेष्ठ माना जाता है। इसी प्रकार परमेश्वर का भी दृश्य काव्य के रुप में समस्त संसार एवं श्रव्य काव्य के रुप में वेदों का ज्ञान और नाटक के रूप में यज्ञ है। यज्ञ परमेश्वर का सबसे श्रेष्ठ काव्य है क्योंकि इसको देखा भी जाता है और गया है-

अश्वं नत्वा वारवन्तं वन्दध्य: अग्निं नमोभि:।
सम्राजन्तमध्वराणाम् ।। (सामवेद-17)

अर्थात् जैसे घोड़ा अपनी पूंछ से मक्खी उड़ाता है वैसे यज्ञाग्नि दु:खो को भगा देती है।

यथा वातश्च्यावयति भूम्यारेणुमन्तरिक्षाञ्चयाभ्रम।
एवा मत् सर्व दुर्भूतं ब्रह्मणत्तमपायति ।। (अथर्व 10-1-13)

अर्थात् जैसे तेज वायु के कारण धूल के कण अन्तरिक्ष में उड जाते हैं वैसे सारे रोग यज्ञ से उड़ जाते हैं। जैसे नाभि की गड़बड़ी से स्वास्थय खराब होता है वैसे ही यज्ञ अगर गड़बड़ हुआ तो समस्त जगत् खराब हो जायेगा, क्योंकि यजुर्वेद कहता है ''**अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:**'' इस नाभि को ठीक रखो पर्यावरण अपने आप ठीक हो जायेगा।

प्रत्येक संधियों में रोग होते हैं चाहे वह दिन-रात की होय ऋतु-ऋतु की हो या अयन की हो या वर्ष की हो। वैज्ञानिकों ने खोज की कि प्रतिदिन प्रात: और सायं की संधियों में अर्थात् जब दिन और रात का मिलन होता है, जब प्रात:काल रात के समापन पर और दिन की शुरुवात में सायं दिन के समापन पर और रात के प्रारम्भ में सन्धि के पूर्व के 20 मिनट और बाद के 20 मिनट अर्थात् प्रात: 40 मिनट और सायं 40 मिनट वातवारण में एक विषैला प्रभाव रहता है उसी के निवारण के लिए हमारे ऋषियों ने कहा- प्रात: और सायं तुम यज्ञ करना वो समस्त दूषणों को दूर करेगा, क्योंकि यज्ञ में सुगन्धित पदार्थो को डाला जाता है अग्नि उसे सूक्ष्म करके वायु को, वो मेघ को, और वो धरती को दे देता है। इस पूरे चक्र की शुद्धि यज्ञ से होती है।

पर्यावरण को शुद्ध करने का उपाय यह है कि वृक्षों की रक्षा की जाए और इन्हें भारी मात्रा में लगाया जाए पर बिना यज्ञ के वृक्ष भी स्वस्थ नहीं रह सकते। एतदर्थ अगर मनुष्य चाहता है कि पर्यावरण पवित्र हो तो एकमात्र उपाय यज्ञ ही है। इसे आज विज्ञान भी स्वीकार कर रहा है माने चाहे न माने, कल्याण हेतु मानता ही पड़ेगा।

ओ३म् शरण में आओ

तर्ज : जल जमना री तीर सॉवरा ।

ओ३म् शरण में आओ जी, ओम् शरण में आओ ।
आओ मेरे भाई आओ जी, ओम् शरण में आओ ।।१।।

मिला है मानव चोला, विषयों में क्यों है रोला ।
ईश्वर से नेह लगाओ जी, ओम् शरण में आओ ।।

प्रभु ने जो भी दिया है, बदले में कुछ न लिया है ।
गुण गान उसी के गाओ जी, ओम् शरण में आओ ।।३।।

जो ओम् शरण मे आते, संताप सभी मिट जाते ।
अतुलित आनंद को पाओजी, ओम् शरण में आओ ।।४।।

विषयों ने हमको घेरा, हुआ जन्म मरण का फेरा ।
फेरे का फेर मिटाओ जी, ओमशरण मे आओ ।।५।।

भूले भटके जो भाई, ईश्वर की राह भुलाई ।
भूलों को राह दिखाओ जी, ओम् शरण में आओ ।।६।।

वेदों को पदाओ, वेदों को सुनो-सुना ओ।
ये परम धर्म अपनाओ जी, ओम् शरण में आओ ।।७।।

वेद 'धर्मधर' भाई, सुन लों आवाज लगाई ।
सब को ये बात बताओ, ओम् शरण में आओ ।।८।।

रचचिता-**आचार्य धर्मधर**
उपप्रधान - आर्य पुरोहित सभा, मुब्मई
मुम्बई-9029421718

ईश्वर भक्ति गायत्री मंत्र के माध्यम से

डॉ. मुमुक्षु आर्य

गायत्री मंत्र

चारों वेदों में आने वाले इस महामंत्र के द्वारा ईश्वर का ध्यान किया जा सकता है, ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है, दैनिक यज्ञ एवं वहद् यज्ञ भी किया जा सकता है। परन्तु उसका पूरा पूरा लाभ तभी होगा जब यम नियमों का ठीक पालन करते हुए इसके एक एक शब्द का अर्थ एवं भावार्थ भली प्रकार स्मरण कर लें। इतना अभ्यास कर लें कि इसकी भाषा आपकी अपनी भाषा बन जाय और इसके द्वारा जप, ध्यान व यज्ञ करते हुए प्रीतिपूर्वक, श्रद्धापूर्वक मन में अर्थ का चिन्तन करते हुए उच्चारण करें और ईश्वर समर्पित रहें

मंत्र- **ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्**
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

यजु. 36.3, ऋ. 3.63.10

शब्दार्थ ओ३म् = हे सर्वरक्षक, सबकी रक्षा करने वाले,
भूः = सब प्राणों के प्राण, प्राण प्रिय, प्राणाधार,
भुवः = दुःख विनाशक, दुःखों को दूर करने वाले,
स्वः = सुख स्वरूप, सुखों कोदेने वाले, आनन्द स्वरुप, आनन्द को देनेवाले प्रभो!
तत् = आप
सवितुः = सब जड-चेतन जगत् को उत्पन्न करने वाले, सबके शाश्वत पिता माता, समग्र ऐश्वर्यों के दाता,
वरेण्यं = अतिश्रेष्ठ, वरणे योग्य, भजने योग्य पूजा करने के योग्य
भर्गः = शुद्धस्वरूप, निर्मल, सब प्रकार के क्लेशों कों भस्म करने वाले, तेजस्वरूप,
देवस्य = दिव्य व्यक्तियों कोभी शक्ति देने वाले, देवों के देव महादेव, कामना करने के योग्य, सर्वत्र विजय कराने हारे हो।
धीमहि = हम आपके तेज को धारण करें अर्थात् आपके ज्ञान-बल-आनन्द को प्राप्त करें, आपके ध्यान में निमग्न रहें॥
धियाः = बुद्धियों को ता जो आप हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेतित करें, मोक्षमार्ग में प्रेरित करें,
यः = आप उत्तमगुण कर्म स्वभावों में प्रेरित करें, हमें मेधा बुद्धि,
नः = हमारी ऋतम्भरा बुद्धि एवं अपनी अनन्य भक्ति का वरदान देकर हमारे इस मनुष्य जन्म
प्रचोदयात् = प्रेरित करें को सफल करें।

भावार्थः- इस प्राण स्वरूप, दुःख विनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

कविता में भावार्थ :-

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू॥
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

नोटः- सन्ध्या एवं गायत्री मंत्र के जप से पूर्व एवं मध्य में कम से कम पांच प्राणायाम करें। भीतर लम्बा श्वास लेकर वेग से बाहर छोड़ें जब तक बाहर रोक सके रोके रखें। घबराहट होने पर धीरे भीतर श्वास लें। यह एक प्राणायाम हुआ। एक बार गायत्री मंत्र का अर्थ सहित उच्चारण करें, एक बार कविता में भावार्थ उच्चारण करें, ऐसे बार बार 15-20 मिनट तक बोल कर उच्चारण करें पश्चात् एक घंटे तक मौन जप करें। मास में 2-3 दिन तक उपवास रख कर दिन रात गायत्री के जप का अनुष्ठान भी किया जा सकता है। जब थक जाओ तब शव आसन में लेट कर जप करो, नींद आए तो कुछ देर सो जाएं, कोशिश करें कि जप करते करते ही आंख लगे।

आर्य समाज, सीवुड नेरूल का चुनाव

श्री हरिदास अगरवाल चुने गए चीफ ट्रस्टी रविवार दि. 5/1/2020 के आर्य समाज में सर्व साधारण सभा का आयोजन किया गया जिसमे समाज की गतिविधियों पर विचार विमर्ष हुआ। इस के बाद अतरंग सभा का चयन हुआ।

श्री हरिदास अग्रवाल- चीफ ट्रस्टी,
श्री ब्रह्म दत्त खुल्लर- चेयर मैन
श्री संजीव अगरवाल- प्रधान
श्रीमती सुनीता यादव- मंत्री
श्री विजय कुमार गुप्ता- कोषाध्यक्ष
डॉ. तुलसी राम बागिया- मैनेजिंग ट्रस्टी
इन के अतिरिकत जुनेजाजी
उपप्रधान, आलोक गुप्ता- उपमंत्री, भरत
टक्कर-उप कोषाध्यक्ष, जमादार पुस्तका ध्यव
सदस्य चुने गए।

साथ साथ महिला आर्य समा के भी गठन किया जिसमें श्रीमती सविता गर्जे प्रधाना एवं शिप्रा करमाकर को मंत्री चुना गया।

डॉ. बांगिपा ने सहयोग के लिए सब का धन्यवाद किया।

क्षमा के अवतार दयानन्द

आचार्य भद्रसेन

महापुरुषों के जीवन में अनेक दैवी तथा महान् गुण हुआ करते हैं। सद्गुण रूपी सुमन-माला से ही उनका कोमल तथा करुणामय कण्ठ सदैव शोभायमान रहता है। महात्माओं के सकल सद्गुणों में क्षमाशीलता भी एक महान् गुण है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके जीवन में क्षमाशीलता के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। ऐसे क्षमाशील महापुरुष देवता के नाम से पुकारे जाते हैं। क्योंकि वे अपने अनिष्टकर्त्ता को भी सदैव क्षमादान ही किया करते हैं।

पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ ''श्रीमद्दयानन्दप्रकाश'' में महाराज की क्षमाशीलता का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

(1) महाराज का स्वभाव अति शान्त, क्षमाशील तथा उदार था। वे कुपित होना तो कभी जानते ही न थे। उनकी अमृतभाषिणी मधुर वाणी में अश्लीलता तथा अपशब्दों का लेश भी न था। उन पर लोगों ने क्या दिन तथा क्या रात अनेक भीषण प्रहार किये। ईंट और पत्थर बरसाये। किन्तु महाराज ने कभी किसी को ताड़ना तक भी नहीं की। वे प्रतीकार में पूर्ण समर्थ होते हुए भी अपराधी पुरुषों के भीषण प्रहारों को भी प्रसन्नतापूर्वक सहते रहे।

(2) ऋषि-जीवन में उनकी क्षमाशीलता के बीसियों उदाहरण मिलते हैं। राव कर्णसिंह पुराण प्रिय पण्डितों के बहकावे में आ क्रुद्ध होकर उनकी जान तक लेने का उद्यत हो जाते हैं और तेज तलवार से उन पर आक्रमण कर देते हैं, किन्तु ऋषिवर अपनी आत्मरक्षा के लिए अपने अतुल ब्रह्मचर्य के बल से उनकी तलवार को पकड़ उसके दो टुकड़े कर देते हैं। किन्तु क्रूर कर्णसिंह को कुछ भी कष्ट नहीं देते हैं।

(3) स्वामी जी अपने हत्यारे जगन्नाथ को धनराशि देकर नेपाल की ओर भगा देते हैं। भला इससे बढ़ कर विश्व में क्षमाशीलता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अन्यत्र कहीं मिलेगा। राजस्थान के एक प्रसिद्ध कांग्रेस के नेता ने ऋषि के सम्बन्ध में वार्तालाप करते हुए मुझे कहा-मैं तो दयानन्द को दुनिया का सब सन्तों से अधिक दयालू तथा क्षमाशील मानता हूँ। ऐसे तो बहुत से उदाहरण मिलते हैं जहाँ अन्य सन्तों ने अपने अहित कर्त्ता अपराधी को क्षमा प्रदान कर दी, किन्तु ऐसा उदाहरण विश्व भर में कहीं नहीं मिलता कि किसी सन्त ने अपने प्राणहर्ता को अपने पास से रुपये देकर उसे वहाँ से छिपाकर 'मौत के पंजे' से भी छुड़ा लिया हो। आज आर्य पुरुषों में थोड़े से विचार भेद होने पर भी वे एक दूसरे के व्यवहार को सहन नहीं कर सकते, परस्पर हम आर्य पुरुष भी एक दूसरे को बदनाम करने तथा उसका अहित करने में तैयार जाते हो हैं। दु:ख तो यह है कि अपने को आर्यसमाज के विद्वान् तथा नेता कहने वाले भी इस संक्रामक रोग के शिकार हो रहे हैं। हमारे विद्वान् थोड़ी सी विचार में भिन्नता होने पर भी एक दूसरे के प्रति अपने लेखों तथा व्याख्यानों में जान बूझ कर ऐसे अप शब्दों का प्रयोग करते हैं कि जिनको पढ़ कर तथा सुनकर बहुत दु:ख होता है। और हृदय में विचार उठता है क्या यही असहिष्णु आर्य विद्वान् तथा नेता ऋषि के मिशन को विश्व में फैलायेंगे हमारा यह परस्पर का असहिष्णु व्यवहार आर्यसमाज की भी अवनति का कारण बन रहा है। अत: आइये हम भी अपने जीवन में यह व्रत लें कि हम परस्पर की त्रुटियों तथा दोषों की उपेक्षा करते हुए एक दूसरे के गुणों का दर्शन कर उन्हें अपने जीवन में धारण करेंगे। ऐसा करने पर जहां हमारे जीवन सद्गुणों से पूर्ण होकर पवित्र बनेंगे, वहां परस्पर की वैमनस्यता के कारण आर्यसमाज में जो शिथिलता आ गई है उसे भी दूर कर हम ऋषि के आशीर्वाद के भागी बनेंगे। यही आत्मनिरीक्षण भावना ऋषि-बोध-दिवस का वास्तविक सन्देश है।

❖❖❖

महर्षिर्विरजानन्दः

(1779-1868 ई.)

वैदिक विद्यामार्तण्डो योऽखिलपाखण्डविभेत्ता
येन दयानन्दर्षिसमानं, नररत्नं समपादि।
यस्याभ्यन्तरनेत्रे ह्यास्तां, दिव्यतेजसा पूर्णे
वन्दनीयकमनीयपदोऽसौ, विरजानन्दमहात्मा ।।7।।

जो वैदिक विद्या के सूर्य-समान होकर समस्त पाखण्ड का खण्डन करने वाले थे, जिन्होंने ऋषि दयानन्द जैसे नवरत्न को प्राप्त किया था, जिन के अन्दर के नेत्र दिव्य तेज से पूर्ण थे, वे महात्मा विरजानन्द वन्दना के योग्य सुन्दर चरणों वाले थे।

आर्षग्रन्थाध्ययनविलोपो जातो भारतवर्ष
सर्वत्रैवानार्षपुसतकाध्ययने जना निमग्ना:।
दृष्ट्वानिष्टं खलु परिणामं, बद्धपरिकरो धीरो
वन्दनीयकमनयपदोऽसौ, विरजानन्दमहात्मा ।।18।।

भारत में आर्षग्रन्थों के अध्ययन का लोप हो गया, सर्वत्र लोग अनार्ष ग्रन्थों के अध्ययन में निमग्न हो गये, इस के अनिष्ट परिणाम को देखकर उस के निवारणार्थ कटिबद्ध धैर्यशाली महात्मा विरजानन्द जी अत्यन्त वन्दनीय हैं।

कथं दक्षिणा देया भगवन् धनरहितेन मयेयम्
दयानन्दयतिमेवं चिन्तातुरमवलोक्य नितान्तम्।
मैवं विधां दक्षिणामीहे माकार्षीस्त्वं चिन्तां
समावश्वासयन्नित्थं वन्द्यो, विरजानन्दमहात्मा ।।19।।

भगवन्! मैं धनरहित कैसे गुरुदक्षिणा दूँ? संन्यासी दयानन्द को इस प्रकार अत्यन्त चिन्तातुर देखकर मैं ऐसी दक्षिणा नहीं चाहता, तू चिन्ता न कर, इस तरह शिष्य को आश्वासन देते हुये महात्मा विरजानन्द वन्दनीय हैं।

वैदिकमार्ग सरलं त्यक्त्वा जना: शुद्धमतिहीना:,
इतस्ततो भ्रष्टा अतिदीना:, शोचनीयगतिमाप्ता:।
सन्मार्ग सन्दर्श्य वत्स तान, दलितान् पतितानुद्धर,
एवं वदन्नुदारो वन्द्यो विरजानन्दमहात्मा ।।20।।

सरल वैदिक मार्ग को छोड़ कर शुद्ध-बुद्धि रहित लोग इधर-उधर भटकते हुए अत्यन्त दीन होकर शोचनीय दशा को प्राप्त हो रहे हैं। हे प्रिय शिष्य! उन को सन्मार्ग दिखा कर दलित, पतित जनों का उद्धार कर। इस प्रकार उपदेश देते हुए उदार महात्मा विरजानन्द वन्दनीय हैं।

आर्षान् ग्रन्थानपठित्वा येऽनार्षपुस्तकेष्वास्थां,
कृत्वा सम्प्रदायशतभक्ता भूत्वातीव विभक्ता:।
निगमागदीक्षां त्वं तेभ्यो दत्वा ध्वान्तं परिहर,
इमां दक्षिणामुररीकुर्वन् विराजानन्दयतीड्य: ।।2।।

आर्ष ग्रन्थों को न पढ़कर, अनार्ष पुस्तकों में ही विश्वास रख कर जो सैकड़ों सम्प्रदायों के, भक्त बन कर अत्यन्त विभक्त हो रहे हैं, उन को वेद-शास्त्र की दीक्षा दे कर अन्धकार का नाश कर। इस दक्षिणा को स्वीकार करते हुए विरजानन्द संन्यासी पूजनी हैं।

अन्तेवासी ये दयानन्दर्षिसमानोऽलम्भि,
यस्य ख्यातिस्तत्कृतसुकृतैरखिले भुवने व्याप्ता।
त्यागतपस्यामूर्तिरुदारो गुरुरादर्शाचार्यो,
वन्दनीयकमनीयपदोऽसौ विरजानन्दमहात्मा ।।2।।

जिन्होंने ऋषि दयानन्द जैसे योग्य शिष्य को प्राप्त किया, जिन की कीर्ति उन के किए उत्तम पुन्य कार्यों से सारे संचार में व्याप्त हो गई, त्याग और तपस्या की मूर्ति उदार आदर्श गुरु और आचार्य महात्मा विरजानन्द अत्यन्त वन्दनीय हैं।

स्वतन्त्रतार्थ कृते विप्लवे, येन गृहीतो भाग:,
तथा प्रेरिता भूपा: कर्तु कान्तिमुत्तमां घोराम।
देशोन्नतितिशुभा भावना भरिता: प्रियतमशिष्ये,
नवयुगनिर्माता किल वन्द्यो विरजानन्दमहात्मा ।।23।।

स्वतन्त्रतार्थ की गई सन् 1857 की क्रान्ति में जिन्होंने भाग लिया तथा राजाओं को उत्तम घोर क्रान्ति करने की प्रेरणा की, जिन्होंने अपने प्रियतम शिष्य दयानन्द में देशोन्नति के लिए उत्तम भावनाएं भर दीं, ऐसे नवयुग निर्माता महात्मा विरजानन्द निश्चय से वन्दनीय हैं।

महापुरुष कीर्तनम से साभार

यह जगत मुसाफिर खाना है।

तर्ज-अब सौपं दिया........

यह जगत् मुसाफिर खाना है, कोई आता है कोई जाता है।
ए मानव सोच समझ लेना, क्या इस दुनिया से नाता है ।। टेक।।

है शाश्वत नियम विद्याता को, जो आज मिले कल विछुडेंगे।
नत मस्तक हो स्वीकार करें, पथ और नजर नहीं आता है।।1।।

हम अपने स्वार्थ की हानि से, बिछुडों का शोक मानते है।
दुख दूर करे सब जीवों का, ईश्वर सब सुख का दाता है ।।2।।

उपहार प्रभु का है जीवन, मृत्यु उसका आमंत्रण है।
स्वीकार करे आमंत्रण जो, वह मौत से ना घबराता है ।।3।।

हमे वेद 'धर्म' को 'धर' कर जीवन में शुभ शुभ कर्म करें।
जो ध्यान धरे धरणी धर का, वह बन्धन से छुट जाता है ।।4।।

वेदाङ्ग ज्योतिष

डॉ. (श्रीमती) पवित्रा विद्यालंकार
आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री,
कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, हाथरस

वेद में सभी विद्याएँ मूलरूप से विद्यमान हैं। यदि मनुष्य किसी भी विषय में जानना चाहता है तो उसे वेदों का अध्ययन करना होगा। वेदार्थ को जानने के लिए ऋषियों ने वेदाङ्ग और उपाङ्गों की रचना की है। वेदाङ्ग 6 हैं, जिन्हें शिक्षा, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष और कल्प कहा जाता है। इन वेदाङ्गों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है-

छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोतमुच्छते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।'

ज्योतिषशास्त्र वेदरूपी शरीर का चक्षु है। अत: वेदाङ्गों में इसको मुख्यता दी जाती है। जिस प्रकार कोई नाक, कान आदि अंगों से युक्त होते हुए भी नेत्रहीन होने के कारण अकिंचित्कर बना रहता है, उसी प्रकार अन्य वेदाङ्गों का ज्ञाता होते हुए भी ज्योतिष न जानने वाला विद्वान् वेदार्थ में पूर्ण सफल नहीं हो सकता है। लौकिक जगत् में जिस प्रकार मनुष्य आंखों से दूरस्थ पदार्थ जान लेता है, उसी प्रकार वेदों में विद्यमान पदार्थों का ज्ञान मनुष्य ज्योतिष से प्राप्त कर लेता है।

ज्योतिष शब्द द्युत दीप्तौ धातु से 'द्युतेरिसिन्नादेशश्चज:' इस उणादि (2,112) सूत्र से बनता है, जिसका अर्थ है धोतते इति ज्योति: दीप्ति-ग्रहनक्षत्राग्नय: अर्थात् प्रकाश, ग्रह, नक्षत्र, अग्नि आदि अर्थ ज्योतिष के हैं। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु आदि ग्रह-उपग्रह नक्षत्रादि प्रकाशमान लोकों को ज्योतिष कहा जाता है। संसार में दो प्रकार के लोक हैं- प्रकाशक और प्रकाश्य। इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। दोनों ही परस्पर पूरक हैं। अत: इनमें परस्पर आदान-प्रदान होता है। दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है, उसी से सृष्टि और सृष्टि-व्यवहार चलता है। प्राणियों की आंखे किसी पदार्थ कोदेख ही नहीं सकती यदि उन पर कही से प्रकाश न पड़े। अत: रूप, रंग, संख्या और आकारादि का ज्ञान बिना प्रकाश के सम्भव नहीं। साथ ही कालक्रम और काल पर होने वाले परिवर्तनों का ज्ञान भी नहीं हो सकेगा। ज्योतिष का क्षेत्र बहुत व्यापक है। बिना ज्योतिष के संसार अन्धा होगा, पराधीन होगा। प्रकाश और ताप के बिना संसार में जीवन का रहना भी सम्भव नहीं।

वर्तमान में जिसे भौतिकी कहते हैं, वह सब ज्योतिष के अन्तर्गत ही आ जाता है। गणित, काल, ज्ञान, गति और उसके नियम, आकर्षण-अनुकर्षण, लोकभ्रमण, प्रकाश, बिम्ब, परावर्तन-आवर्तन, भूगोल खगोल, भूगर्भ विद्यादि का अध्ययन ज्योतिष में ही समाहित है। उक्त सभी विषयों का वर्णन वेदों में मूल रूप से उपलब्ध है। ज्योतिषशास्त्र के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है- 'दो वर्ष में ज्योतिषशास्त्र, सूर्यसिद्धान्तादि जिसमें बीजगणित, अंकगणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भविद्या है इसको यथावत सीखे।'' 'अनेकानेक करोड़ों भूगोल, सूर्य, चन्द्रादि लोकनिर्माण-धारण, भ्रामण, नियम में रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई नहीं कर सकता। 'जो विद्यादि उत्तम गुणों का देने वाला परमेश्वर है उसी के जानने के लिए सब जगत् दृष्टान्त है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्योतिष द्वारा सृष्टिविज्ञान मानवहृदय में आस्तिकता की भावना को सुदृढ़ करता है। ज्योतिष के प्रयोजन 'ज्योतिषविवेक' नामक पुस्तक में इस प्रकार दिये गये हैं- सृष्टिविज्ञान, आस्तिक्यभावना, तत्त्वज्ञान, अघमर्षण, वेदार्थज्ञान, वैदनित्यत्वज्ञान, वेदरक्षा, वैदिक लौकिक शब्दज्ञान, ऊह, आगम, गणितज्ञान, फलित का अन्धकारनिवारण तथा इतिहासकालनिर्णय।

वर्तमान में ज्योतिष शब्द सुनते ही लोगों का ध्यान जन्मपत्री, भविष्यफल और शुभाशुभ मुहूर्त्तज्ञान की और जाता है। ज्योतिषी शब्द भी पञ्चाङ्ग देखकर भविष्यकथन करने वाले व्यक्ति के लिए नियत हो गया है, जो इसका अनर्थ ही है। वास्तव में ज्योतिषी का अर्थ भौतिकविज्ञान का ज्ञाता, कालवित्, गणितज्ञ आदि है। जन्मनक्षत्रों, ग्रहों व जन्मपत्री के आधार पर भविष्यकथन और शुभाशुभ मुहूर्तविचारादि सब मिथ्या प्रलापमात्र हैं।

महर्षि यास्क ने नक्षत्र शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है- **'नक्षतेर्गति कर्मा'** अर्थात् जो गतिशील है, निरन्तर गति कर रहा है, तेज, प्रकाश, ऊर्जा का भण्डार है, वह नक्षत्र है। सूर्य में भी ये सभी गुण विद्यमान हैं, इसलिए इसे भी नक्षत्र कहा गया है- **'तस्मादु सूर्य नक्षत्र एव स्याद्।''** अकेला सूर्य ही नक्षत्र नहीं है, अपितु अनन्तानन्त नक्षत्र हैं- **'यथैवासौ सूर्य एवं नक्षत्राणि।'** सूर्य भी एक नहीं है, अपितु अनेक हैं- **'सप्तविशो नाना सूर्या:।'** सूर्य नक्षत्र है तथा इसके चारों ओर पृथिवी मंगल, बुध, गुरु आदि ग्रह भ्रमण कर रहे हैं। सूर्य स्वयं गतिशील है और सभी ग्रह गति कर रहे हैं- **'शन्नो विविचरा ग्रहा:।'** नक्षत्र कल्याण करते हैं- **'समाश्चन्दो नक्षत्राणि।'** अर्थात् नक्षत्र प्रसन्नता देने वाले हैं। 'ये न क्षिणोति इति (न+क्षत्र) किसी को कष्ट नहीं देते, इसलिए इन्हें नक्षत्र कहा गया है।

अथर्ववेद के 19वें काण्ड के 7वे सूक्त के मन्त्र संख्या दो से पाँच तक में 28 नक्षत्रों का उल्लेख है, जो इस प्रकार है- कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण, श्रविष्ठा (घनिष्ठा), शतभिषज, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी। वेद में आए हुए अभिजित् नक्षत्र की गणना आधुनिक ज्योतिषी नहीं करते हैं। आधुनिक ज्योतिषी 27 नक्षत्र ही मानते हैं। वेद में नक्षत्रों का प्रारम्भ कृतिका से तथा अन्त भरणी नक्षत्र से होता है। ज्योतिष में नक्षत्रचक्र का प्रारम्भ अश्विनी नक्षत्र में तथा अन्त रेवती नक्षत्र से होता है।

फलित ज्योतिषी 27 नक्षत्रों में से कुछ नक्षत्रों को शुभ तथा कुछ को अशुभ मानते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र से पहले आने वाले अनुराधा नक्षत्र को शुभ तथा ज्येष्ठा नक्षत्र को अशुभ मानते हैं। मुहूर्त्तचिन्तामणि में लिखा है-

अभुक्तमूलभेभवं परित्यजेत्तु बालकम्।
समाष्टकं मा पिताथवा न तन्मुखमवलोकयेत्।।

अर्थात् मूल नक्षत्र में यदि बालक पैदा होता है तो माता-पिता उसे छोड़ दे अथवा आठ वर्ष तक पिता बालक का मुख न देखे। यदि पिता ने बालक का आठ वर्ष से पहले मुख देख लिया तो पिता मर जायेगा।

दिवा जातं तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा।
आत्मानं सन्ध्योर्हन्ति ....।।

अर्थात् मूल नक्षत्र में दिन के समय बालक पैदा हुआ तो पिता मर जायेगा। रात्रि में पैदा हुआ तो माता मर जायेगी। सायंकाल या प्रात:काल में पैदा हुआ तो स्वयं मर जायेगा।

इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म नक्षत्र में हुआ। उनके पिता आत्माराम दुबे की बालक को देखने के कारण मृत्यु न हो जाय, इस भय के कारण उनकी माता ने बालक को आठ वर्ष के लिए कहीं अन्यत्र रख दिया। आठ वर्ष के बाद उन्हें घर लाया गया। तुलसीदास ने इस पीड़ा को व्यक्त करते हुए अपने ग्रन्थ कवितावली में लिखा-

मातु पिता जगा जाई .... जायो कुल
मंगल बधायो न बजायो।
तंज्यों कुटिल कीट ज्यों मात पिता हूँ।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि फलित ज्योतिष विषयक ग्रन्थों में ग्रह, नक्षत्र, राशि (जिनका वेद, रामायण, महाभारत आदि किसी ग्रन्थ में वर्णन नहीं है) के नाम पर राहु-केतु का भय, मंगल-मंगली, जन्मकुण्डली, भविष्यफल, शुभाशुभ मुहूर्त्त आदि के नाम पर जो भ्रम फैलाया जा रहा है, वह सब वेदविरुद्ध और काल्पनिक है। किसी ने ठीक ही कहा है-

गणिका गणकौ समानधर्मो निजपञ्चाङ्गवर्शकावुभौ।
जनमानसमोहकारिणौ तौ विधिना वित्तहरौ विनिर्मितौ।।

अर्थात् गणिका (वेश्या) और गणक (ज्योतिषी) दोनों ही समानधर्मी हैं। दोनों की अपने पञ्चाङ्ग दिखाकर जनमानस को मोहग्रस्त करते हैं। विधाता ने दोनों को परधनहरण के लिए बनाया है। कहने का तात्पर्य यह है कि फलित ज्योतिष मिथ्या है। वेदाङ्ग ज्योतिष जिसे महर्षि दयानन्द ने गणित ज्योतिष कहा है, वह वेदार्थज्ञान में सहायक है। वेदाङ्ग ज्योतिष से वेदार्थ तो प्रकाशित होगा ही भारत का गौरव भी प्रकाशित होगा।

लौह पुरुष स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज का अंतिम उपदेश

लेखक : स्वामी सदानन्द जी सरस्वति

बाल ब्रह्मचारी स्वामी स्वतंत्र आनंद जी महाराज को आर्य समाज में लाने का श्रेय महाशय कृष्ण (मालिक वीर प्रताप) को है।

महाराज जब बीमार अवस्था में थे तब उनको एक स्वप्न आया था स्वप्न के द्वारा उनको यह विदित हो गया था कि यह भौतिक शरीर छोड़ना होगा 1 दिन महाशय कृष्ण जी ने महाराज जी से प्रार्थना की महाराज आप को मुंबई ले जाना चाहते है, महाराज ने कहा महाशय जी अब यह शरीर स्वस्थ नहीं होगा परंतु आजीवन आपकी आज्ञा का पालन किया है, अंतिम आज्ञा भी मान लेता हूं।

स्वामी जी को मुंबई ले जाया गया इलाज आरंभ हुआ, 1 दिन मुंबई से पंडित रामचंद्र जी के नाम दयानंद मठ दीनानगर में तार आया, तार में लिखा था मुंबई जल्दी पहुंचो, पंडित मुंबई पहुंचे महाराज के दर्शन किए महाराज ने उपदेश आरंभ किए, यह उपदेश महाराज जी की वाणी के द्वारा अंतिम उपदेश था।

श्री राम अब मैं भौतिक शरीर छोड़ रहा हूं, आज से आपका नाम स्वामी सर्वानंद होगा और आपको मैं स्वतंत्रानंद दयानंद मठ दीनानगर का अध्यक्ष नियुक्त करता हूं, दीनानगर जाकर स्वामी वेदानंद महाराज जी से संस्कार करा लेना, मेरी अंत्येष्टि यहां मुंबई में कर देना, मेरी भस्मी मठ के खेतों और बगीचों में डाल देना, अंत समय में पंडित रामचंद्र जी को स्वामी जी महाराज ने आदेश देते हुए कहा, देखो मैं बहुत संस्थाओं का प्रधान रहा हूँ, किंतु तू किसी संस्था का प्रधान आदि बनने की इच्छा प्रकट ना करना, यदि बना दे तो बन जाना अपने आप बनने का प्रयास ना करना।

आर्य समाज का इतिहास लेखक यह लिखेगा उनके उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने उनकी आज्ञा का अक्षर से पालन किया है, और कर रहे हैं।

आर्य समाज के गृह कलह के परिणाम स्वरूप उनको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान बनाने के लिए उनको बार-बार प्रार्थना करके मनाना पड़ा सभा का प्रधान बनने के लिए उनसे बार-बार अनुनय विनय की गई, आर्य समाज के छोटेबड़े चौधरी कुर्सी इच्छा करने बाले नेताओं की दूर प्रवृत्तियों को जानते हुए स्वामी जी इस जाल में ना फंसे इतिहास साक्षी है की प्रधान के रूप में 2 वर्ष सभा के सर्व स्वामी सर्वानंद जी महाराज रहे, परंतु इस अवधि में सभा के कोष से एक पैसा भी स्वामी जी महाराज के लिए किराए भाड़े भोजन जलपान आदि पर व्यय नहीं हुआ। सभा के कार्य के लिए निरंतर भागदौड़ करते रहे।

आर्य समाज के इतिहास में जहां गृह कार्य हो रहा था सब पद के पीछे भाग रहे थे परंतु स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने कभी भी पद की इच्छा नहीं की, स्वामी जी अपना पथ पर अडिग रहते थे, बड़ी-बड़ी स्थानों एवं छोटे-बड़े अधिकारियों से बहूत कुछ सुनना भी पड़ा परंतु स्वामी स्वतंत्रानंदजी महाराज के इस चरण अनुरागी और महान गुरु के महान शिष्य ने अपने आचरण से सन्यास की मर्यादा को पुनर्जीवित करके दिखाएं।

अत्यंत अल्प काल में सभी को इस तपोधन की साधना के सामने शीश झुकाना पड़ा। इतिहास का कोई विद्यार्थी इस घटना को दृष्टि से ओझल नहीं कर सकता।

आर्य प्रतिनिधि सभा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से यह उल्लेख होता रहेगा, कि स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने 10 वर्ष तक अधिष्ठाता वेद प्रचार व आचार्य श्रीमद दयानंद उपदेशक महाविद्यालय का कार्य भार संभाला, तव सभा का विराट रूप था। सभा की शक्ति संगठन का क्या कहना, स्वामी स्वतंत्रानंद जी भीक्षा के भोजन से अपने जीवन को निर्वाहन करते थे। सभा पर उनका कोई बोज नहीं था। स्वामी सर्वानंद जी प्यारे गुरु द्वारा स्थापित मर्यादा को स्थापित करके आर्य समाज के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। फलो का रस पीने वाले स्वामी सर्वानंद स्वामी स्वतंत्रानंद, स्वामी सर्वदानंद स्वामी आत्मानंद की शान को क्या समझे।

संकट के साये में भविष्य

डॉ. शिवगोपाल मिश्र

पर्यावरण में तेजी से बढ़ रहे असन्तुलन को दृष्टि में रखते हुए दिसम्बर 2005 में ''दैनिक जागरण'' में श्री रहीस सिंह का एक लेख उक्त शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। मुझे शीर्षक अति जीवन्त लगा । इस में भविष्य के पर्यावरण का लोमहर्षक चित्रण किया गया है, जो हर नागरिक को सचेत करने के लिए काफी है। उसकी कुछ बातें यहाँ देना प्रासंगिक प्रतीत हो रहा है।

''क्रमिक विकास की यात्रा में मानव ने प्रकृति पर नियन्त्रण कायम करके उसके साथ काफी छेड़-छाड़ की है जिस का परिणाम यह हुआ है कि उसे अक्सर प्रकृति के प्रकोपों को झेलना पड़ा । इसके बावजूद पारिस्थितिक असन्तुलन की परवाह किये बिना मनुष्य ने अपनी विकास यात्रा जारी रखी है। अब स्थिति यह आ गई है कि वैज्ञानिक यह घोषणा करने लगे हैं कि यदि ग्लोबल वार्मिंग को नियन्तित नहीं किया गया तो ग्रीनलैंड की 3000 मीटर बर्फ की पट्टी पिघलने पर न्यूयार्क और टोकियो जैसे नगर समुद्र में डूब सकते हैं।''

''विशेषज्ञों का मानना है कि दुनिया के सामने उपस्थित खतरे से निपटने का एकमात्र उपाय है कि जितनी जल्दी हो सके ''ग्रीन हाउस इफेक्ट'' पैदा करनेवाली गैसों का उत्सर्जन रोका जाय।

''यदि ग्लोबल वार्मिंग से बर्फ पिघलती है तो इन के नीचे जमीन का ग्रीन हाऊस गैसों के निकलने से तापमान भी और तेजी से बढ़ेगा यानी एक पर्यावरणीय चक्र प्रारम्भ होने की सम्भावना है जैसा कि कोलोरैडो स्थित ''स्नोडेटा सेन्टर'' के विशेषज्ञों का भी मत है।

''उपग्रह से प्राप्त चित्रों के अनुसार सितम्बर 2005 में आर्कटिक समुद्री बर्फ का स्तर औसत से 20% नीचे चला गया जबकि आम तौर पर सितम्बर में बर्फ का स्तर इतना नीचे नहीं जाता था। इस बार 5 लाख वर्गमील तक अतिरिक्त बर्फ पिघली है। यदि ऐसी ही स्थिति रही तो इस सदी के अन्त गर्मी के मौसम में आर्कटिक महासागर पूरी तरह हिमरहित होने की स्थिति में आ जायेगा। समुद्री बर्फ पिघलने से वातावरण में गर्मी बढ़ सकती है क्योंकि गहरे रंग का पानी सूर्य की किरणों को जल्दी अवशोषित कर लेता है।

आर्कटिक क्षेत्र के पयावरण में आये बदलाव का बुरा प्रभाव सारे संसार पर पड़ सकता है।

सामान्य तौर पर 1967 से ही प्रयास आरम्भ हो गये थे जब बाह्य अन्तरिक्ष सन्धि में यह व्यवस्था की गई थी कि बाह्य अन्तरिक्ष में भेजी जाने वाली वस्तुओं से पृथ्वी पर पर्यावरण सन्तुलन को बिगाड़ा नहीं जाना चाहिए। इसी प्रकार 1972 में समुद्री प्रदूषण से बचाव सम्बन्धी व्यवस्था की गई लेकिन सही अर्थ में 5 जून 1972 को जब संयुक्त राष्ट्र ने मानवी पर्यावरण पर सम्मेलन आयोजित किया तो पर्यावरण एक मुद्दा बना। 30 राष्ट्रों के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र ने 1972 में एक विश्व चार्टर पारित किया जिसमें कहा गया- ''मानवता ऊर्जा के लिए प्राकृतिक व्यवस्था पर निर्भर है और सभी सभ्यताओं की जड़ें प्रकृति में ही हैं। अत: प्रकृति को गिरावट से बचाना आवश्यक है।''

''जब क्लोरोफ्लोरोकार्बन द्वारा ओजोन की परत में हो रही क्षति की खोज हो गई तो पर्यावरण सुरक्षा के प्रति राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्नों में तेजी आई सर्वप्रथम 1974 में यह बात सामने आई कि ओजोन की मात्रा में कमी का कारण क्लोरोफ्लोरोकार्बन का बढ़ता उपयोग है और उसके लिए विकसित राष्ट्र अधिक जिम्मेदार हैं। इस दिशा में विकसित राष्ट्रों द्वारा 1987 में माण्ट्रियल प्रोटोकाल के बाद पहल की गई।

''अगला चरण रियो पृथ्वी सम्मेलन-1992'' रहा जिसमें टिकाऊ विकास के लिए व्यापक कार्यवाही योजना एजेण्डो-21 स्वीकृत किया गया। यह एजेण्डा 1500 वैज्ञानिकों द्वारा दी गई चेतावणी का प्रतिफल था जिसमें कहा गया था कि यदि मानवीय दु:खों से बचना है और इस ग्रह पर हमारे भूमणडलीय परिवार को क्षत-विक्षत होने से रोकना है तो पूथ्वी के बार में हमें अपनी सोच बदलनी होगी। पर्यावरण पर भारी तनाव है और प्राचीन नस्लों की जो अपरिवर्तनशील क्षति हो रही है, उसे यदि रोका नहीं गया तो सभी जीवित प्राणियों की संख्या वर्ष 2100 तक एक तिहाई रह जायेगी।''

''जिस तरह आबादी बढ़ रही है, उसके अनुसार आने वाले 20 वर्षों में खाद्यान्न उत्पादन के लिए 17% तथा अन्य कार्यों के लिए 40% अतिरिक्त जल की आवश्यकता पड़ेगी। अनुमान है कि वर्ष 2025 तक एक तिहाई देशों में रहने वाली विश्व की दो तिहाई अबादी जल के गम्भीर संकट से त्रस्त दिखाई पड़ेगी।

''इस दिशा में 11 सितम्बर 1997 को ग्लोबल वार्मिंग पर ''क्योटो सन्धि'' पर हस्ताक्षर हुए और वह 16 फरवरी 2005 को अस्तित्त्व में आ गई।

''2002 में जोहन्सबर्ग सम्मेलन में'' विश्व सतत पोषणीय विकास तकनीक सम्बन्धी कार्य योजना के प्रस्ताव पर सहमति बनाई गई थी और लक्ष्य रखा गया था कि वर्ष 2015 तक ऐसे लोगों की संख्या आधी रह जायेगी जो स्वच्छता में नहीं रह पा रहे हैं। यह प्रस्ताव रखा गया था कि बिना साफ पानी वालों की संख्या भी इस अवधि में घटाकर आधी कर दी जायेगी।''

पर्यावरण की वर्तमान स्थिति

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व के देखें के 10-15 वर्षों के पर्यावरण का अध्ययन करके जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है उस के कुछ निष्कर्ष उल्लेखनीय है-

(1) विश्वभर के 62.5 करोड़ व्यक्ति प्रदुषित वांयु में साँस ले रहे हैं। आठ महानगरों में सल्फर डाईऑक्साइड गैस की सर्वाधिक मात्रा पाई गई है जिनमें शेनयांग, तेहरान, सियोल, रियोडिजेनिरो तथा बीजिंग-ये पांच शहर तृतीय विश्व में हैं।

(2) विश्व की 10% नदियाँ प्रदूषित हैं जिनमें से गंगा नदी का स्थान सर्वोपरि है।

(3) विश्व की आधे से अधिक सिञ्चित भूमि के विनाश का खतरा है क्योंकि नये मरुस्थल 130,00000 एकड़ प्रति वर्ष की दर से आगे बढ़ रहे हैं।

(4) उष्ण कटिबन्धीय वनों का हास प्रति वर्ष 270,00000 एकड दर की नर से हो रहा है। मिट्टी की ऊपरी परत का अपरदन 260,00000 टन प्रतिवर्ष की दर से हो रहा हैं।

(5) उष्ण कटिबन्धीय वन, जो विश्व के अधिकत पौधों और पशुओं के जन्मस्थल हैं, 20 हेक्टर प्रतित मिनट की दर से लुप्त होते जा रहे हैं। संकट के सार में भविष्य

(6) ऊपरी वायुमण्डल की ओजोन परत दिनोदिन पतली होती जा रही है।

(7) विश्व का तापमान बढ़ रहा है जिस से हिमनदों के पिघलने से महासागरों का जलस्तर ऊँचा होगा और बहुत सा भाग पानी में समा जायेगा।

देश धर्म का दिवाना-पं. घासी राम गौड

हमारा भारत देग महान ईश्वर, भक्त त्यागी-तपस्वी, देश भक्त वीरों की जन्म भूमी है। समय-समय पर इस देश में भारत वीरों ने अपना सर्वस्व देश धर्म की रक्षा में अर्पित करके भारत माता का मस्तिष्क संसार में ऊंचा किया है, उन्हीं देश भक्त वीरों में से एक है **पं. घासीराम गौड।**

पं. घासीराम गौड का जन्म 5 मार्च सन 1901 ई. में ग्राम बहीन जनपद गुरुग्राम पंजाब प्रान्त (हरियाणा) में हुआ था। इनको माता का नाम श्री मति लाडो देवी तथा पिता का ना पं. बुद्धिराम गौड था। वे तीन भाई तथा उनकी एक बहिन थी वे अपने बहिन-भाग्यों में सबसे छोटे थे इसलिए उनके माता-पिता उन पर भारी प्यार करते थे। उनकी माता लाडो देवी उन्हे रामायण महाभारत की कहानियां सुनाया करती थी इसलिए वे ईश्वर भक्त वीर साहसी देशभक्त बन गए ये। उनकी पत्नी का नाम चमेली देवी था पं. घासी राम गौड को 8 वर्ष की आयु में ग्राम बहीन के विद्यालय में पढने बैठाया गया । वे कुशाग्र बुद्धि थे। वे हर श्रेणी में प्रथम आते थे, चौथी कक्षा में उन्होंने छात्रवृत्ति प्राप्त की थी तथा जिल्हा गुरुग्राम में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

चौथी कक्षा पास करने के बाद उन्हे डी. बी. माध्यमिक विद्यालय दोडक (गुरुग्राम) में प्रवेश दिलाया गया तथा वहां भी वे हर कक्षा में प्रथम रहे। आठवी श्रेणी की वार्षिक परीक्षा में भी उन्होंने छात्रवृत्ति प्राप्त करके पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपने माता-पिता व गुरुओं का नाम उंचा किया। उनके विद्यालय के मुख्य अध्यापक पं. पूरनलाल शर्मा उनपर बहुत प्यार करते थे तथा उन्हे (हिरो) कहकर बुलाते ये।

आठवीं कक्षा पास करने के बाद वे राजकीय पाठशाला शिकोहपुर, गुरुग्राम (पंजाब) में अध्यापक नियुकत्त हो गए। उन्हे शिक्षक के पद पर कार्य करते हुए तीन वर्ष ही बीते थे कि एक नई घटना घट गई। जिल्हें का शिक्षा अधिकारी (अंग्रेज) एक दिन अचानक पाठशाला में आ गया तथा रैब डाटते हुए पं. घासीराम से कहने लगा कि एक मुर्गा मंगा दे। यह सुनकर पं. घासीराम ने कहा कि मैं ब्राह्मण हू तथा भगवान परशुराम जी का वंशज हूं इसलिए मैं तेरी बात नहीं मानूं, यह सुनकर जिला शिक्षा अधिकारी ने उन्हे ब्लाडी कहकर अपमानित किया तो पं. घासीराम जी ने लाठी उठाकर उसको पीटना सुरु कर दिया तो पं. घासी राम जी ने इसकी शिकायत जिलाधीस (अंग्रेज) गुरुग्राम से कर दी तथा जिल्हाधीस ने पं. घासी राम को अपने पास बुलाकर रौब झाडते हए पंडि जी से कहा कि इंस्पैक्टर से माखी मांग लो इसी में भला है वरना जेल भिजवा दूंगा। यह सुनकर पं. घासी राम ने निर्भय होकर कहा-जनाष मैं भगवान परशुराम का वंशज गौड ब्राह्मण हूं, मैं कभी भी इससे माफी नहीं मागूंगा? आप अब मुझसे गलत बात मत कहना। जिला धीस नाराज होकर बोला तू ''ब्लाडी'' है।

जिला धीस की बेहूदी बातें सुनकर पं. घासी राम गरुजते हुए बोले। श्रीमान जी आप कान खोलकर सुनलो।

''मैं ईश्वर भक्त सदाचारी हूं नहीं मौत का खौंफ मुझे।
देश धर्म पर मिट जाऊंगा, बता रहा हूं साफ तुझे।।
तुम दोनों मांसाहारी हो इस दुनिया से मिट जाओगे।
तुम घोर नर्क में जाओंगे, हरगिज ना बचने पाओगे।।''

यह सुनकर जिलाधीश भारी नाराज हो गया तथा पं. घासी राम गौड को नौकरी से हटा दिया। पंडित जी फौरन वहा से चल दिए तथा घर ग्राम बहीन (गुरुग्राम) आकार अपने माता-पिता श्रीमति लाडो देवी पं. बुद्धि राम गौड को बीता हुआ सारा हाल सुनाया। यह सुनकर दोनों माता-पिता बहुत खुश हुए तथा अपने पुत्र को शाबासी दी और छाती से लगा दिया। धन्य थे पंडित घासी राम और उसके माता-पिता।

इसके बाद पं. घासी राम स्वतंत्रता संग्राम में सम्मलित हो गए। कई बार जेल यात्रा की तथा कठिन यातनाएं झेलीं। पंडित जी के माता-पिता वैदिक विचार धारा के समर्थक थे। वे महर्षि दयानंद सरस्वती को भारत का सच्चा सपूत मानते थे, उनके विचारों का प्रभाव पं. घासी राम के जीन पर भी पडा। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के पक्के भक्त बन गए तथा हैदराबाद नबाव के विरुद्ध चलाए गए सत्याग्रह में भी जेल गए। सन् 1956 में पंजाब में हिन्दी भाषा पर रोक जगाई जा रही थी तब भी वे हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लेते हुए जालंधर (पंजाब) जेल में दो महीना बंद रहे। पंजाब की प्रताप सिंह कैरों सरकार के घुटने टिकबा दिए। सन् 1966 में स्वामी रामेश्वरानन्द सस्स्वती (सांसद) पंडित जगदेव सिंह सिद्धान्ती (सांसद) आचार्य भगवानदेव गुरुकुल झज्जर (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) तथा पंडित प्रयागवीर शास्त्री (सांसद) के द्वारा चलाए गए गऊ रक्षा आन्दोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ कर भाग लिया तथा दिल्ली की तिहाड जेल में रहे। वे कभी भी अन्याय के सामने नहीं झुके। वे धन्य थे।

चौ. रणजीत सिंह आर्य ध्यानी (गुरुग्राम) श्री अब्दुलमनी डार बैरिष्टर (सांसद) लाला ग्यासी राम बहीन (गुरुग्राम) श्री रुपलाल मेहता (पंजाब) विधायक तथा चौ. कल्याण सिंह (पलवल) उनके प्रिय मित्र थे। हरियाणा के भक्त चौ. कूलसिंह राहक तथा चौ. राधेलाल बहीन (ग्ररुग्राम) चौ. समशेर सिंह डोंडल (गुरुग्राम) के साथ मिलकर सन् 193 में अपने ग्राम बहीन (गुरुग्राम) में बहुत बडा शुद्धि सम्मेलन आयोजित किया जिसमें लाखों मूलों - मलकानों की शुद्धि कराकर धर्म रक्षा का महान कार्य किया।

15 दिसम्बर सन् 1998 में पं. घासी राम गौड भारत मां के प्रिय सपूत का में देहान्त हो गया। वास्तव में वे मानवता के सच्चे अवतार ये। उनके सरल स्वभाव तथा सद्व्यवहार से सब उनके प्रशंसक व प्यारे बन जाते थे। भगवान ऐसे महामानव, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, देश भक्त भारत में लाखों पैदा करे। अन्त में:-

हे भारत मां के प्रिय पुत्रः, तुम देश धर्म के सेवक थे।
दुखियों के सबल सहारे थे, तुम श्रेष्ठ कवि अस लेखन थे।।
जब तक जग में सूर्य चांद जग को प्रकाश दिखाएंगे।
तब तक जग के नरनार, यशगान तुम्हारे गाएंगे।।

- पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बदीन जनपद पलवल (हरियाणा)
चल भाषा क्रमांक : 9813845774

महर्षि दयानन्द के कुछ प्रेरक व शिक्षाप्रद प्रसंग

खुशहालचन्द्र आर्य

वैसे तो महर्षि दयानन्द के जीवन में सैकड़ों प्रेरक व शिक्षाप्रद प्रसंग है, पर यहाँ पर कुछ प्रसंगो को ही प्रस्तुत करते हैं। वे इसी भाँति है।

1. मैं ज्ञानी भी और अज्ञानी भी:- गुजरात में, डॉ. विशनदास यद्यपि वेदान्ती थे। उन्होंने महर्षिजी से निवेदन किया कि लाहौर से निवृत्ति पाकर गुजरात की जनता को भी उपकृत करने की कृपा करें। महर्षिजी पौष सुदी नवमी, संवत् 1934 को गुजरात पहुँच गये। एक दिन दमदमे में विश्राम किया। अगले दिन फतहनगर जाकर ठहर गये। प्रवचनों के पश्चात पादरी और मौलवी विभिन्न धार्मिक विषयों पर चर्चा करते और शंका का समाधान महर्षि जी करते। महर्षि जी इस समय तक समझाते जिस समय तक जिज्ञासु की जिज्ञासा शान्त न हो जाती। महर्षि जी अपने तर्कों और प्रमाणों से मिथ्यावादियों के मुँह बन्द कर देते। एक दिन कुछ लोगों ने परामर्श किया कि दयानन्द से कोई ऐसा प्रश्न पूछा जाये कि वे निरूत्तर हो जाएँ। उन्होंने निश्चय किया कि अगली सभा में महर्षिजी से पूछें कि आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी है? यदि उन्होंने कहा हम तो ज्ञानी हैं, तो हम उनसे कहेंगे कि आप तो घमण्डी हैं। विद्वान कभी घमण्डी नहीं होते। यदि उन्होंने कहा कि अज्ञानी है तो हम, झट कह देंगे कि फिर दूसरों को आप क्या शिक्षा देंगे? ऐसा प्रश्न सोचकर वे बहुत प्रसन्न हुए और महर्षि जी के पास पहुँच गये। उनके समीप बैठकर एक ने प्रश्न किया- 'महर्षि जी आप ज्ञानी हैं कि अज्ञानी?'' महर्षि जी ने तुरन्त उत्तर दिया- ''मैं ज्ञानी भी हूँ और अज्ञानी भी।'' पण्डितों में से एक ने फिर प्रश्न किया- ''दोनों कैसे हो सकते हैं आप?'' महर्षि ने कहा ''जिन विषयों को मैं जानता हूँ, उनमें ज्ञानी हूँ, जिन विषयों को मैं नहीं जानता उसमें मैं अज्ञानी हूँ।

पण्डितों के पास और कोई प्रश्न नीं था । वे चुपचाप उठकर चले गये। आपस में चर्चा कर रहे थे कि महर्षि जी को विद्वत्ता में परास्त करना सम्भव नहीं है।

2. महर्षि दयानन्द की दया :- एक पाठशाला में पण्डितजी पढ़ाते थे। उन्होंने अपने छात्रों से कहा कि हम भी कथा सुनने चलेंगे। तुम सभी पुस्तकों के थैलों में ईंट-रोड़े और पत्थर भर कर वहाँ बैठना। जब मैं संकेत करूँ, उसी समय कथा करने वाले पण्डित के ऊपर ये कंकड़-पत्थर बरसा देना, फिर हम तुम्हें लड्डू देंगे। वह पण्डित उन बच्चों को लेकर महर्षि जी के सभा में पहुँच गया। साँझ होते ही उसने छात्रों को संकेत कर दिया बच्चों ने महर्षि पर कंकड़-पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिये। उनमें से कुछ बच्चों को पुलिस ने पकड़ कर महर्षि जी के सामने प्रस्तुत कर दिया। बच्चे डर रहे थे। महर्षि जी ने प्यार से पूछा कि तुम हमारे ऊपर पत्थर क्यों फेंक रहे थे? बच्चों ने पण्डित जी द्वारा कही गई सारी बातें महर्षि जी को बता दी। महर्षि जी ने तुरन्त लड्डू मँगवाए और बच्चों में बाँट दिया।

3. सत्य कहने में हमें कोई भय नहीं :- महर्षि दयानन्द सरस्वती एक निर्भीक संन्यासी थे। अपनी बात को सरल सपाट शब्दों में कहने से वे कभी नहीं चूकते थे। सभी जानते थे कि महर्षि जी किसी भी मत की उन बातों का खण्डन करते हैं जो अतार्किक, अव्यवहारिक और वेद-विरूद्ध हों।

महर्षि जी की प्रवचन-सभा चल रही थी। उसी मार्ग से डिप्टी कलैक्टर अलीजान जा रहे थे। वे भी महर्षि जी के प्रचार कार्य से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने अपनी सवारी रोकी और महर्षि जी से बोले कि अपने व्याख्यानों में आप बहुत कठोरता से काम लेते हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। महर्षिजी ने तपाक से उत्तर दिया कि हम असत्य कभी नहीं कहते। सत्य कहने में हमें कभी किसी से भय नहीं है।

4. अन्न दूषित नहीं होता:- महर्षि जी प्रचारार्थ फर्रूखाबाद (उ.प्र.) नगर के बाहर लाला जगन्नाथ के विश्रानाघाट पर जाकर विराजे। नियमित रूप से नगरवासी उनके प्रवचन सुनने के लिए आने लगे। कुछ पण्डित लोग महर्षि जी से शास्त्रार्थ करने की चर्चा तो करते परन्तु उनके सम्मुख आने का साहस न जुहा पाते।

उस नगर में घर-गृहस्थी बसाकर रहने वाले कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें साधु कहकर पुकारा जाता था, परन्तु उनके हाथ का बना भोजन ब्राह्मण नहीं करते थे। एक दिन एक ''श्रद्धालु साधु परिवार का सदस्य अपने घर कढ़ी भात बनवाकर महर्षि जी की सेवा में उपस्थित हुआ और भोजन लेने की प्रार्थना की। भोजन का समय था। महर्षि जी ने प्रेमपूर्वक शान्त भाव से भोजन किया। इस बात की जानकारी जब वहाँ के ब्राह्मणों को हुई तो उन्होंने भारी विरोध किया। वे महर्षि जी के समीप जाकर बोले कि हमलोग भी उन साधुओं द्वारा बनाया भोजन नहीं करते हैं। उनके हाथ का बना भोजन करके आदमी पतित हो जाता है। ऐसा करना आपके लिए उचित नहीं था।

महर्षि जी उनकी बातें सुनकर हँसते हुए बोले कि किसी के हाथ से बना अन्न दूषित नहीं होता। अन्न दुषित तब होता है जब वह अनुचित साधनों से प्राप्त किया जाये या उसमें किसी अखाद्य वस्तु का मिश्रण कर दिया जाये। इन लोगों का अन्न परिश्रम से कमाया हुआ अन्न है, इसलिए इसके ग्रहण करने में कोई दोष नहीं है। ऐसे पवित्र अन्न को ग्रहण करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

5. सत्य का प्रकाश करना मेरा धर्म है :- भादो द्वादशी संवत् 1936 को महर्षि जी बरेली (उ.प्र.) पहुँचकर लाला लक्ष्मीनारायण की कोठी में ठहर गये। उनके प्रवचनों में सामान्य जनों के अतिरिक्त उच्च सरकारी अधिकारी भी भाग लेते थे। एक दिन प्रवचन में महर्षि जी ने ईसाई धर्म के सम्बन्ध में कहा कि ये लोग कुमारी से सुपुत्र होना बताते हैं और उसके लिए परमात्मा को दोषी ठहराते हैं।

इससे सभा में उपस्थित कमिश्नर साहब क्रोधित हो गए और लक्ष्मीनारायण को बुलाकर कहा कि अपने पण्डित को समझाइए। वे अपने व्याख्यानों में कठोरता न बरतें। हमलोग तो शिक्षित है। हिन्दू और मुसलमान भड़क गए तो स्वामीजी को भारी पड़ जायेगा।

लक्ष्मीनारायण जी ने साहस करके यह सूचना महर्षि जी को दी। अगले दिन स्वामीजी ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया कि कुछ सज्जन मुझे कहते हैं कि सत्य न कहें। ऐसा करने से कलैक्टर, कमिश्नर साहब रुष्ट हो जायेंगे। महर्षि जी ने गरजते हुए कहा कि चक्रवर्ती राजा भी चाहे कुपित क्यों न हो जाए, परन्तु दयानन्द सत्य का प्रकाश करने से नही रुक सकता। उन्होंने आगे कहा कि दयानन्द के शरीर को नष्ट किया जा सकता है, परन्तु दयानन्द की आत्मा को छिन्न-भिन्न करना किसी के वश की बात नहीं है। अपने शरीर की रक्षार्थ दयानन्द सत्य के रास्ते में नहीं हट सकता।

6. तोप का भय दिखाने पर भी वेद की श्रुतियाँ ही निकलेंगी :- मेरठ में महर्षि जी ने सहारनपुर के रास्ते देहरादून के लिए प्रस्थान किया। वे सहारनपुर स्टेशन पर कुछ समय रुके और अपने भक्तों से संक्षिप्त वार्तालाप किया। उस समय उनके एक भक्त लाला भोलानाथ वैश्य ने चिन्तित होकर कहा कि महाराज, जैनी आपको गिरफ्तार कराकर कारावास में डलवाना चाहते हैं। उन्होंने इस आशय का विज्ञापन छपवा दिया है। इस पर महर्षि जी मुस्कुराये और बोले, ''भोलानाथ जी, मुझे कोई तोप के मुख पर बाँध कर भी पूछे कि सत्य क्या है? तब की दयानन्द के मुख से वेद की श्रुतियाँ ही निकलेंगी।''

❖❖❖

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष–११ अंक–०१ मुम्बई जनवरी – २०२० पृष्ठ–१६ मूल्य– रु. ९/–

मार्गशिर्ष – २०७६ (२०२०) Post Date : 25-01-2020 MCN/136/2019-2021 MAHRIL 06007/31/12/21-TC पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : **संगीत आर्य**

मुद्रक एवं प्रकाशक : **चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस,** २६, मंगलदास रोड, मुंबई–२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई–४०० ०५४. से प्रकाशित किया। ● **दूरभाष : २६६० २८०० / २६६० २०७५**

प्रति, ____________

____

____

नः ______ टिकट

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 16 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 16 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न आर्य समाज सांताक्रूज के विशाल सभागृह में आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 16 वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। यज्ञ के सामाजिक, आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक पहलुओं पर चर्चा के साथ एक विशाल यज्ञ का आयोजन भी किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा हरिद्वार से पधारे **स्वामी यज्ञदेव जी** थे। उन्होंने बताया, 'यज्ञ केवल कर्मकांड ही नहीं अपितु जीवन और जगत के अनेक समस्याओं का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक समाधान भी है।

यज्ञ में मुख्य यजमान **श्री महेश वेलाणी** घाटकोपर के सुपुत्र प्रशांत जी पुत्रवधू निराली जी थे।

श्री योगेश आर्य मुंबई में यज्ञ से संबंधित भजनों के द्वारा वातावरण को संगीतमय बना दिया। यज्ञ चिकित्सा से लोगों का उपचार करने वाले डॉ तारा सिंह ने सभी को प्राणायाम कराते हुए यज्ञ से सभी प्रकार के रोगों से बचा जा सकता है ऐसे उत्तमोत्तम विचार प्रदान किए और अपने आरोग्य केंद्र के विभिन्न रोगियों के अनुभवों को भी बताया।

इस अवसर पर आर्य पुरोहित सभा मुंबई की ओर से अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष कार्य करने हेतु विशिष्ट महानुभाव सर्वश्री **ब्रज पटेल जी दादर, मगन भाई जी दहिसर, तुलसीराम बांगिया जी, नवी मुंबई रमेश हासानंदानी जी सांताक्रुज, डॉक्टर तारा सिंह जी मीरा रोड, ओम प्रकाश शुक्ला जी शुक्ला जी, वसई विनोद वेलाणी घाटकोपर, वेदप्रकाश गर्ग चेंबूर, स्वामी यज्ञमुनि जी मुनि जी हरिद्वार, श्रीमती लता वोरा, श्री योगेश कुमार, सांताक्रुज** को स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया सभा के पदाधिकारी **नामदेव आर्य** (प्रधान), नरेंद्र शास्त्री (महामंत्री), **विनोद कुमार शास्त्री** (कोषाध्यक्ष), **धर्मधर आर्य** (उपप्रधान), **प्रभारंजन पाठक** (संयोजक) और मुंबई के लगभग भिन्न-भिन्न स्थानों से आए हुए पुरोहितो ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण योगदान दिया श्री **संदीप आर्य** मंत्री आर्य समाज सांताक्रुज ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापन किया। शांति पाठ जय घोष हुआ तत्पश्चात सभी ने प्रीतिभोज का आनंद लिया।

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान द्वारा मनुस्मृति संगोष्ठी संपन्न

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह में नारायण प्रकाशन वाराणसी से प्रकाशित गीत संग्रह 'तुम जलाना दीप बाती' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुधाकर मिश्र ने की जबकि महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि रामनयन दुबे थे। तीन सत्रों में विभाजित इस समारोह का दूसरा सत्र समाज का आदि संविधान : मनुस्मृति पर था। संदीप आर्य और योगेश मिश्र ने इस पर अपने-अपने विचार साझा किया। अध्यक्षीय भाषण में पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से पधारे स्वामी यज्ञदेव जी ने कहा, मनुस्मृति में समाज विरोधी जो भी अंश मिलते हैं वे प्रक्षिप्त हैं। मनुस्मृति की प्रतियाँ इन्हीं प्रक्षिप्त अंशों के कारण जलाई जाती है। बाबासाहेब ने स्वयं मनुस्मृति की मूल प्रति का समर्थन किया था। सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों ने इस पुस्तक के सिद्धांत को अपने यहाँ लागू करवाया है। संचालक नरेंद्र शास्त्री जी ने बताया कि यदि किसी को मनुस्मृति से संबंधित कोई भी भ्रम हो तो आर्य समाज में रखी मूल प्रति से जाँच कर सकता है। समारोह का तीसरे सत्र में काव्य संध्या का आयोजन था। युवा कवि पवन तिवारी, कमलेश पाण्डेय 'तरुण', विनय शर्मा 'दीप', डॉ. अभय शुक्ला और तेजस सुमा श्याम की कविताओं का श्रोताओं ने जमकर आनंद उठाया। काव्य संध्या का संचालन सुमन मिश्रा के द्वारा किया गया। इस अवसर पर महानगर की कई प्रमुख हस्तियाँ मौजूद थीं। आभार ज्ञापन डॉ. जीतेन्द्र पाण्डेय ने किया।

❖❖❖